भारत-भाग्य-विधाता

स्वामी दयानन्द सरस्वती

(नाटक)

बसन्त कुमार रत्न

भारत-भाग्य-विधाता
स्वामी दयानन्द सरस्वती
(नाटक)
लेखक

बसन्त कुमार रत्न
B-VIII / 393, किला मुहल्ला,
बरनाला-148101
फोन : 01679-235265, M. 93175-71713

प्रथम संस्करण : February 2007

सर्वाधिकार सुरक्षित (लेखक)

प्रकाशक : राज कुमार सिंगला : (परिवार सहित)
H No. B-XI/ 2106
राम बाग रोड बरनाला (148101)
कार्यालयाध्यक्ष श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज
बरनाला (पंजाब)
Mobile - 98148 99321

मुद्रक : **सोनी ऑफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली।**

मूल्य : **सजिल्द 50/-**

॥ ओ३म ॥

पात्र-परिचय

(प्रवेश-क्रमानुसार)

पात्र	संकेत
सूत्रधार	सूत्रधार
नटी	नटी
डकौंत	डकौंत
आर्य सेवक	आर्य से०
आपने राम	आपने रा०
जेठमल	जेठमल
कहार	कहार
भूपाल सिंह	भू० सिंह
इति बाबा	इति बा०
लछमन दास	ल० दास
मोटू	मोटू
कलुआ	कलुआ
विद्यार्थी	विद्यार्थी
निहंग	निहंग
सन्यासी एक	सन्यासी एक
सन्यासी दो	सन्यासी दो
विदूषक	विदूषक
देवर	देवर

॥ ओ३म् ॥

अंक पहला

दृश्य पहला

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 27

दिन शनिवार

समय

ब्रह्ममुहूर्त

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

पहला अंक

(पहला दृश्य)

नांदी

ओ३म

भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

सूत्रधार जो आप मेरे बारे में जानते हैं, मैं वो नहीं हूँ। मैं जो हूँ, वो आप नहीं जानते।

(नेपथ्य से नटी की आवाज़)

नटी आर्यपुत्र! आप किस से बातें कर रहे हैं?

सूत्रधार रंगशाला में प्रतीक्षा कर रहे दर्शकों से।

नटी दर्शकों से ? पर अभी अभी तो नांदी के रूप में गायत्री का पाठ सुनाई दे रहा था।

सूत्रधार तेरा मन तो श्रृंगार में रमा है, आर्ये। वह तो अभी भी सुनाई दे रहा है। ध्यान दे।

(मध्यम पर सुस्पष्ट स्वर में गायत्री पाठ सुनाई देता है)

नटी — (नेपथ्य से ही) आर्य पुत्र। आपने ठीक कहा। सुनाई तो दे रहा है। पर स्वर बदला हुआ भासित हो रहा है।

सूत्रधार — देखो न आर्ये! फिर भूल करती हो। स्वर बदला हुआ भासित ही नहीं हो रहा। सचमुच बदला हुआ है। जानती नहीं, यह किसका स्वर है?

(कोई उत्तर नहीं मिलता)

(नेपथ्य की ओर देखकर)

सूत्रधार — क्या कर रही हो आर्ये! इतनी देर लगा दी। दर्शक बेचारे उतावले हो रहे हैं, नाटक देखने को। उन्हें जिज्ञासा है, महर्षि मंच पर न आकर भी कैसे, सारा समय नाटक में उपस्थित रहेंगे।

नटी — (नेपथ्य से मंच पर आकर) क्षमा करना आर्यपुत्र! नाटक के पात्रों को सजाने में देरी लग गई।

सूत्रधार — चलो किया माफ़। ज़रा सुनो आर्ये, ब्रह्ममुहूर्त्त की इस पावन-बेला में गायत्री-मंत्र का यह पाठ कानों में जैसे अमृत उंडेल रहा है। जानती हो! किसका स्वर है यह?

नटी — नहीं जानती, आर्य-पुत्र! पर जान लूँगी तो फिर भूल नहीं पाऊंगी। स्वर की मधुरिमा ही ऐसी है।

सूत्रधार — तो जानो।

(मंच पर दर्शकों की ओर पीठ करके, बायीं ओर

संकेत करता है) वह देखो 'अजमेर' की यह राजा भिनाय की कोठी, जिस को आतिथ्य के लिए तैयार करने में लगा है, आर्यसेवक।

नटी — कार्य में संलग्न रहते, ईश्वर से प्रार्थना हेतु गायत्री-जाप। अति सुन्दर, अति महान पर आर्यपुत्र! सेवक को गायत्री-मंत्र के अर्थों का ज्ञान होगा क्या?

सूत्रधार — क्यों नहीं आर्ये ? अवश्य होगा। इससे पहले भी महर्षि अजमेर में कई बार आ चुके हैं। महाराज के श्रीमुख से गायत्री-मंत्र की व्याख्या भी वह कई बार पूरे ध्यान से कर चुका होगा। यह कदापि नहीं हो सकता कि गायत्री-मन्त्र के अर्थ उसे ज्ञात न हों!

नटी — पर पता कैसे चले आर्यपुंत्र। बुला कर पूछ न लूँ।

(आवाज़ देने लगती है)

सूत्रधार — अरे न, न, न, न, न, आर्ये! देखो तो बेचारा कितनी तन्मयता से जुटा है, अपने काम में। कोठी की पार्श्व-वाटिका में प्राणायाम तथा सन्ध्योपासना में तल्लीन व्यक्ति से मैं, आर्य-सेवक को श्रेष्ठतर समझता हूँ।

नटी — ठीक है, आर्यपुत्र ! इसके लिए काम ही पूजा है। पर, महर्षि के आने में अभी कितनी देर है?

सूत्रधार — बस यह उनके पधारने का समय है। ठीक चार बजे गाड़ी स्टेशन पर पहुंचती है और वहां से यहां तक पालकी में पधारने का समय...

नटी — (बात काट कर) परन्तु पालकी में क्यों ? क्या महर्षि

स्वस्थ नहीं है, आर्य पुत्र।

सूत्रधार — नहीं आर्ये ! पात्रों के लिये वेश-भूषा के चयन तथा नाट्य-मंचन की चिंताओं ने लगता है तुम्हें सब कुछ भुला दिया। मैने बताया था...

नटी — क्या ? क्या बताया था, आर्यपुत्र! आपने यह भी बताया था कि एक बार सम्भवतः सन् 1869 ई. के इसी मास में महर्षि जब काशी में थे तो एक व्यक्ति भोजन लेकर उनके पास आया। पर भोजन आपने पा लिया था। सो, उसने पान खाने का आग्रह किया जो वह ले के आया था। महर्षि ने प्रेम व सत्कार से प्रेरित हो वह पान खा लिया। इधर उन्होंने पान मुंह में रखा, उधर वह सिर पर पांव रख कर भागा। पीछे पता चला कि पान में विष था।

सूत्रधार — और आर्ये! यह भी तो बताया था कि फिर जब महर्षि सन् 1870 के इसी मास में अनूप शहर पधारे, वे पहां अप्रैल 1872 तक रहे थे, तो भी उन्हें, एक ब्राह्मण ने, महर्षि द्वारा की जा रही मूर्ति पूजा के खण्डन से रुष्ट होकर, पान ही में विष दे दिया था।

नटी — हां आर्यपुत्र! हां! याद आया। महर्षि ने तब न्योली-कर्म द्वारा वह विष अपने शरीर से निकाल दिया था और स्वस्थ हो गये थे। इस बार...?!!!

सूत्रधार — इस बार की बात मत पूछो आर्ये! वहां अनूप शहर में तो, वहाँ के तहसीलदार सैयद मुहम्मद ने उस ब्रह्मणा को छोड़ देना पड़ा था।

(नटी के मुँह की ओर ज़रा ध्यान से देखकर)

आर्ये! बहुत द्रवित हो गई हो! नयन अश्रुओं से प्लावित हो गए हैं। क्या बात है?

नटी — कुछ नहीं, आर्यपुत्र! बस यूँ ही ज़रा...

सूत्रधार — बस यूँ ही ज़रा। क्या आर्ये? हृदय में किसी नये गीत का प्रस्फुटन हुआ हो तो लाओ ज़रा हम भी सुनें।

नटी — आपने ठीक समझा आर्यपुत्र! महर्षि का विष देने वाले को भी क्षमा-दान देना, क्या क्षमा की पराकाष्ठा नहीं?

(नटीप गीत)

दयानन्द। देव वेदों का, उजाला ले के आऐ थे।
करों में ओ३म् की पावन, पताका ले के आऐ थे।
न थे धन-धाम-मठ-मन्दिर, न संग चेली न चेला थे।
हृदय में वे मगर विश्वास-ऐ-आल्हा ले के आऐ थे।
गऊ, विधवा दलित दुखिया अनाथों दीन जन के हित।
नयन में अश्रुकण, मानस में करुणा ले के आऐ थे।
अविद्या सिन्धु से अगणित, जनों को पार करने को।
परम सुखदायिनी, सत्ज्ञान नौका ले के आऐ थे।
पिलाया ज़हर का प्याला उन्हें जिन दुष्ट लोगों ने।
ऋषि उनके लिए क्षमा-अमृत प्याला ले के आऐ थे।

सूत्रधार — सुन्दर! अति सुन्दर!! आर्ये, पर तुम्हारे गीत में अनायास आ गए शब्द 'थे' ने मेरे मन को उद्वेलित कर दिया है। सोते हुए भारत को जगाने वाले महर्षि को घृणा, ईर्ष्या तथा वैरभाव से दिया जाने वाला विष प्याला शायद अन्तिम सिद्ध हो, इस बार।

नटी — नहीं! नहीं!! ऐसी बात अपने श्रीमुख से न निकालें, आर्यपुत्र! मैं तो अपने गीत की पंक्ति के अंतिम शब्द् 'थे' को 'हैं' में बदल देती हूँ।

(नटी गीत की पहली पंक्ति को इस प्रकार दोहराती है):

'दयानन्द देव वेदों का उजाला ले के आये हैं।'

सूत्रधार — नहीं, अब कुछ नहीं हो सकता आर्ये। सहज-भाव से निकले शब्द कई बार भविष्यवाणी हो जाया करते हैं। और लगता भी है, नहीं तो उदयपुर में जब महर्षि पूर्णतः स्वस्थ थे तो उन्होंने 'स्वीकार-पत्र' क्यों तैयार करवा लिया था ? आज से पूरे आठ महीने पहले अर्थात् 27 फरवरी सन्न 1883 ई. को।

नटी — क्या था उस 'स्वीकार-पत्र' में ? समय हो तो संक्षेप में बता दीजिए, आर्यपुत्र!

सूत्रधार — समय तो नहीं है आर्ये! फिर भी बताता हूँ। कदाचित् दर्शक ऊब गए लगते हैं। ''मैं स्वामी दयानंद सरस्वती निम्नलिखित नियमों के अनुसार तेईस सज्जन आर्य-पुरुषों की सभा को वस्त्र पुस्तक धन और यन्त्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूँ।''

नटी — तेईस आर्य-पुरुषों की इस सभा का नाम भी तो कुछ रखा होगा ? हे आर्यपुत्र ! उस सभा का प्रधानत्व महर्षि ने किसे प्रदान किया है ?

सूत्रधार — सभा का नाम है, 'परोपकारिणी-सभा' और प्रधान पदउदयपुराधीश को प्रदान किया है।

नटी — उदयपुराधीश, महाराणा सज्जन सिंह ही हैं न? क्या मेवाड़ाधिपति ही ने महर्षि से यह प्रार्थना नहीं की थी, आर्यपुत्र! कि जोधपुर जाकर वेश्या गमनादि कुकृत्यों का खण्डन न करें।

सूत्रधार — ठीक है, आर्ये। पर महर्षि किसी कुकृत्य को देख लें और चुप रहें ऐसा हो नहीं सकता था। जब ही जोधपुराधीश की इस कमज़ोरी का उन्हें पता चला तो जोधपुर नरेश के भ्राता महाराजा किशोर सिंह जी से साफ-साफ कह दिया कि राजपुरुष सिंह के समान हैं और वेश्यायें कुतिया के समान।

नटी — और वह, 'नन्हीं जान' की पालकी को नरेश द्वारा कन्धा लगाए जाने वाली बात मिथ्या है क्या ?

सूत्रधार — सरासर मिथ्या। आर्ये ज़रा सोचो तो सही जोधपुराधीश के रनवास में महर्षि चुपके से कैसे चले गए होंगे कि कहारों द्वारा त्वरता में, पालकी, उठाने से झुक गयी और नरेश को स्वयं सहारा देना पड़ा। आखिर थी तो 'नन्हीं-जान' जोधपुर नरेश की रखेल ही।

नटी — हां, हां आर्यपुत्र! राजप्रासाद में द्वारापाल तथा दूसरे नौकर-भृत्य भी तो होंगे ?

सूत्रधार — अवश्य होंगे, आर्ये! बाकी रही 'नन्ही-जान' के महर्षि के प्रति वैमनस्य की बात। वह हो सकता है महर्षि के फैजुल्ला खाँ की कोठी के आँगन में दिए गये व्याख्यानों की प्रतिक्रिया मात्र हो, क्योंकि उनमें महर्षि द्वारा क्षत्रियों के चरित्र-संशोधन पर बहुत बल दिया होता था।

(नटी कान पर हाथ रखकर, एड़ी उठाकर कुछ सुनने का सा प्रयास करती है। उसी की तरह अभिनय करता सूत्राधार नटी से पूछता है।)

सूत्रधार — क्यों, क्या बात है आर्ये ? क्या सुन रही थी ?

नटी — कुछ नहीं आर्यपुत्र! मुझे भासने लगा था, जैसे दर्शक कानाफूसी करने लगे हैं। कहते होंगे, अजीब हैं ये सूत्रधार और नटी! नाटक का समय हो रहा है, और पात्र अभी तक...

(दर्शकों की ओर से कुछ सुनने का अभिनय करती है)

सूत्रधार — अरे, रे, रे, रे! ग़ज़ब हो गया आर्ये ! तुम्हारी नाट्य-योजना में तो वैसा कोई पात्र नहीं था, जैसा कि वह चला आ रहा है।

(एक ओर संकेत करता हुआ पीछे हटता है)

नटी — (उस ओर देखकर पीछे हटती हुई) तो आप-श्री कोई यत्न कीजिए न, आर्यपुत्र! अपना सूत्राधार नाम सार्थक कीजिये, नहीं तो बहुत गड़बड़ी हो जायेगी।

सूत्रधार — अच्छा आर्ये ! यत्न करता हूँ।

(हाथ से नटी को ओट में करता हुआ)

पर इस एक गलती को ठीक करने के लिए, हो सकता है नाटक के अन्त तक हमें मन्च के समीप रहना पड़े। थक-ऊब तो नहीं जाओगी, आर्ये ?

(ओट में से नटी का स्वर सुनाई देता है)

नटी — नहीं आर्यपुत्र ! कदापि नहीं। दर्शकों के लिए मनोरंजन जुटाने में ऊब कैसी ?

(डकौत का प्रवेश)

डकौत — (कोठी के बरामदे में बुहारी लगा रहे आर्य सेवक की ओर लोटा उठाकर) जै शनि ! शनिच्चर बली, दे तेल दी पलो। जै हो ! शनि मनावे, सदा सुख पावे। तेल-त्राम्बा दान ऐ।

आर्य से० — पहले ये बता, क्या तू पाता है सदा सुख।

(नकल उतारता हुआ)

शनि मनावे, सदा सुख पावे।

(ज़ेब से पैसा निकालता हुआ) ले, पकड़। तेल नहीं, 'त्रांबे' का दान ही सही। ले बोल मन्त्र।

डकौत — (लोटे को आगे करके) ओं शन्नो देवो रभिष्टे आपूँ भभन्तू पीताय। शन्नो रवि सर्वन्त ने। शनिच्चराय नमो नमे।

(एक पैर से उतारी हुई जूती पहनने लगता है)

आर्य से० अच्छा, तो यह किस चीज़ का मन्त्र है ?

डकौत शनि का !

आर्य से० शनि का! अरे पंडित ! इस मन्त्र का तुम्हारे शनि से कोई मतलब नहीं और मन्त्र का शुद्ध पाठ है : ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय: आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु न:॥ और इसका अर्थ है: सर्वव्यापक परमेश्वर मनोवान्छित सुख ओर शान्ति के लिऐ हमें कल्याणकारी हो, और हम पर सब ओर से सुख की वृष्टि करे।

डकौत सुख की वरखा तो शनि ही कर देगा। तू ने शनि को मना लिया।

आर्य से० नहीं मनाया शनि-वनि मैंने। यह तो दर पर आए अतिथि का यथा-योग्य सत्कार तथा आतिथ्य किया है। आज हमारे स्वामी जी आने वाले हैं, उनके स्वास्थ्य-लाभ हेतु प्रार्थना कर ली है। शनि-वनि नहीं मनाया मैंने। मैं एक ईश्वर के सिवा किसी को नहीं मानता।

डकौत मानता क्यों नहीं ? अभी-अभी शनिच्चर देवता का मन्त्र सुना रहा था। मानता नहीं, तो ये मन्त्र क्यों रट रखा है ?

आर्य से० अरे भले पण्डित! कह दिया न, सह मन्त्र शनिश्चर देवता का नहीं है। इसमें उस एकमात्र निराकार ईश्वर से ही सुख की याचना की गई है। और अगर, तुम्हारे

अनुसार यह 'शनिच्चर देवता' का ही मन्त्र है, तो मैं जब तुम्हारे 'शनिच्चर' को ही नहीं मानता, उसके मन्त्र को क्यों मानूँगा ?

डकौत ठीक है, भई, तू क्यों मानने लगा ? तेरे पर होती शनि की दशा, तू फिरता भागा-भागा ज्योतिषियों के पीछे, जन्म-पत्रिका ले के। तब पता चलता तुझे शनि क्या होता है।

आर्य से० अब तुझे मैं कैसे समझाऊँ। हमारे स्वामी जी जन्म-पत्रिका को 'शोक-पत्रिका' कहा करते है। तुम्हारे ये सभी ग्रह, जप, दान आदि ढकोसला हैं। मूर्ति, मन्दिर सब दुकानदारियां हैं।

डकौत दुकानदारियां हैं, तो अभी-अभी अपने स्वामी जो की सेहत के लिए प्रार्थना क्यों की थी?

आर्य से० प्रार्थना ही तो की थी कोई गुनाह तो किया नहीं था, और वह भी ईश्वर से की थी, तुम्हारे शनिच्चर से नहीं की थी।

डकौत यही तो बात है! तुम्हारे स्वामी जी की जन्मपत्री में सेहत वाले घर पर ज़रूर शनिच्चर की क्रूर दृष्टि होगी। शनि के मन्त्र का जाप करवाओ बच्चा।

आर्य से० एक बार कह दिया न बाबा। मुझे नहीं है विश्वास शनि-वनि पर या उस के मन्त्र पर।

डकौत फिर तेरा किस मन्त्र पर विश्वास है?

आर्य से० गायत्री-मन्त्र पर।

डकौत — गायत्री-मन्त्र पर? केवल रट ही, रखा है, या अर्थ भी जानता है?

आर्य से० — अर्थ क्यों नहीं आते, खूब आते हैं। कण्ठस्थ हैं। सुनो ''जो सब समर्थों में समर्थ, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, कृपासगर, ठीक न्याय का करने हारा, जन्म-मरणादि क्लेश-रहित, घट घट की जानने हारा, धाता, पिता, पोषक तथा शुद्ध स्वरूप है और प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस चेतन-ब्रह्म परमात्मा को ही हम धारण करें ताकि वह हमें बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।''

डकौत — (लोटे को नीचे रखकर, आर्य सेवक को अपनी बाहों में लेकर चक्कर काटता हुआ) अरे वाह, आर्य सेवक! अपने राम बड़े खुश हुए। कमाल कर दी तूने तो। पास हो गया, तू परीक्षा में।

(बाहों से नीचे उतार देता है)

आर्य से० — (घिरणी से सम्भलता हुआ) कौन अपने राम? अरे यह क्या नाटक रचाया है?

अपने रा० — नाटक नहीं प्यारे, परीक्षा।

आर्य से० — परीक्षा ? मैं कुछ समझा नहीं।

अपने रा० — बात यह है सेवक प्यारे कि स्वामी इतने रुग्ण पहले कभी हुए नहीं। अब जिस हालत में वे यहां आ रहे हैं, आर्य-सभा वाले नहीं चाहते कि कोई अप्रिय घटना घटे।

आर्य से० — अप्रिय घटना? देर न करो अपने राम, जल्दी बताओ। तुमने यह स्वांग क्यों......

अपने रा० — वही तो बताने जा रहा था। लेकिन तुम सुनते कहां हो?

आर्य से० — अच्छा अब नहीं बोलूँगा, जल्दी से बताओ स्वामी जी आते ही होंगे समय हो गया है।

अपने रा० — ठीक है समय हो गया है, पर अभी देर है। स्टेशन पर ही था जब गाड़ी आई थी। हमने देखा, स्वामी जी फस्टकलास के डिब्बे में लेटे हैं, दो तीन आर्यपुरुष उनके पास बैठे हुए हैं। चार मनुष्यों ने महाराज को गाड़ी से उतारा, परन्तु वे उतरते ही बे-होश हो गए उन्हें पालकी में सावधानी से लिटा कर बहुत धीरे धीरे इधर लिवा ले आने की बात चल रही थी।

आर्य से० — पर कोई डाक्टर-वाक्टर तो उस समय कहां उपलब्ध हुआ होगा?

अपने रा० — नहीं। एक जने को डाक्टर लछमनदास को बुलाने के लिए पण्डित भागमल की कोठी पर भेज दिया गया था। उसके बाद मुझे पता नहीं क्या हुआ होगा? महाराज की मूर्छा टूटी होगी कि नहीं, ईश्वर ही जानता है।

आर्य से० — लेकिन इतनी सवेर तुम्हें यह वेष-धारण करने के लिये दाढ़ी, लोटा तथा दूसरी आवश्यक सामग्री कहां से मिली? और इसकी ज़रूरत ही क्यों पड़ी?

ज़रूरत पड़ी तुम्हारें इस तिलक के कारण।

अपने रा० तिलक के कारण! क्या करते हो अपने राम? पहेली पर पहेली बुझवाए जा रहे हो?

आर्य से० सच्ची बात है। समाज वालों का विश्वास था कि चाहे तुम महराज के बताए वेदानुकूल मार्ग पर चलने लगे हो, पर क्यों जो तुमने तिलक लगाना नहीं छोड़ा, सो तुम अन्दर से सनातनी होगे। और वे, यानि, समाज वाले, नहीं चाहते थे कि विरोधाचरण वाला कोई व्यक्ति महाराज-श्री की सेवा में रहे। सो तुम्हारी परीक्षा लेने की ड्यूटी मेरे उपर लगी थी, और इसके लिये ज़रूरी तैयारी मैंने कल सायं ही कर ली थी।

अपने रा० अच्छा तो यह बात थी। अब जब कि तूने मेरी परीक्षा ले ली है तो मैं भी अपने दिल की बात तुम से बताता हूँ।

आर्य से० ठीक है सुना डालो, पर अब महाराज-श्री......

अपने रा० तो, फिर कभी सही।

आर्य से० नहीं, अब सुना ही डालो। तैयारी-वैयारी तो तुमने सब कर ही रखी होगी?

अपने रा० हां, हां! सब ज़रूरत का सामान निश्चित स्थान पर रख दिया है। सब टिचन है। चाहे स्वामी जी अभी आ जायें।

आर्य से० (नेपथ्य से 'अदीनास्याम शरदः शतम्' के स्वर सुनाई देते हैं)

अपने रा० (नेपथ्य की ओर कान करके ध्यान से सुनने का अभिनय करता हुआ) आ क्या जायें, लो आ गये स्वामी जी। आओ देखलें, सब ठीक-ठाक है क्या? (दोनों का कोठी में प्रवेश)

सूत्रधार (सामने आकर) आदरणीय दर्शकगण! नाटक मंचन के इतिहास में यह प्रथम बार है कि कोई पात्र अपने आप ही मंच पर आ गया हो। यह मेरा कर्त्तव्य था कि मैं उसे मंच पर न आने देता। अपनी इस कोताही के कारण मैं कसूर-वार हूँ। मुझे इसकी सज़ा सुनाइए।

नटी (दर्शकों की ओर हाथ जोड़कर) रंगशाला में उपस्थित दर्शक-वृन्द! यदि आप मुझे अधिकार दें तो मैं इन, आर्य-पुत्र को कर्त्तव्य-च्युति की सज़ा सुनाऊँ।

(मिलने वाले किसी सम्भाव्य संकेत को पाने का अभिनय) क्या कहा? सुना दूँ। सुनो, हे आर्यपुत्र!

सूत्रधार ठहरो, आर्ये। जनता की ओर से मिले, दण्ड सुना सकने के इस महती अधिकार को प्राप्त करके उनका धन्यवाद न करना, कोई आशीर्वाद न देना, अशिष्टता नहीं क्या?

नटी भूल हो गई, आर्यपुत्र! कर्त्तव्य चेताने के लिए पहले आपका तथा अधिकार सौंपने पर दर्शकों का शत बार धन्यवाद और आशीर्वाद रूप में ऋग्वेद की यह ऋचा

'विश्वं पुष्ट ग्रामे अस्मिन्ननाहरम्'॥

(तीन बार दोहराती है)

सूत्रधार — वाह! वाह!! आर्ये नाटक-सिन्धु में गोता लगाकर अमूल्य आशिष-माणिक ले आने पर बधाई! अति सुन्दर चयन!! और बिल्कुल समयानुकूल जबकि नाटक का नायक रुग्णावस्था में हो तो, "इस गाँव के सब लोग स्वस्थ और नीरोग रहें" कहना। भई वाह! कमाल कर दी!!

नटी — बस कीजिए, आर्यपुत्र! प्रसंसा के पुल बाँधे चले जा रहें हैं। कहीं दण्ड से बच निकलने की तो नहीं सोच रहे?

सूत्रधार — बिल्कुल नहीं, आर्ये! सुनाओ दण्ड। मैं तैयार हूँ।

नटी — तो सुनो! पहला दण्ड तो यह कि नाटक आरम्भ करने में तनिक भी देरी न लगाई जाये। दूसरा यह कि आप कोई ऐसा प्रबन्ध करें कि मंच पर विराजमान हर एक पात्र द्वारा सोची जा रही बात भी दर्शकों को सुनाई देती रहे।

सूत्रधार — ऐसा हो सकना असम्भव नहीं है आर्ये। हां, कठिन ज़रूर है। और इसमें बहुत बड़ा गड़बड़झाला हो जाने का डर भी है। कोई पात्र अपना कथन पेश कर रहा होगा तो दूसरा क्या सोच रहा है, यह भी सुनाई देने लगेगा। बड़ा घोटाला हो जाएगा, आर्ये।

नटी — पर कमान से निकला तीर जैसे नहीं लौटाया जा सकता, सुनाया गया दण्ड वापस नहीं लिया जा सकता, आर्यपुत्र! आपको तो नाट्य-शास्त्र के प्रणेता भरत मुनि का आशीर्वाद प्राप्त है। संस्कृत के महाकवि

कालीदास से आपकी मित्रता रही है। क्या आप इतनी सी थोड़ी व्यवस्था नहीं कर सकते?

सूत्रधार — अच्छा आर्ये! ज़रा सोचने दो (सोचकर) लो, हो गई व्यवस्था।

(अपना उत्तरीय उतार कर मंच के एक कोने में बिछाता है) लो, प्रिये! जो कोई पात्र इस मैट पटके पर खड़ा होगा, वह क्या सोच रहा है, दर्शकों को सुनाई देगा। अच्छा अब जाओ, देर न लगाओ।

(दोनों का दौड़ कर प्रस्थान)

॥ ओ३म् ॥

अंक पहला

दृश्य दूसरा

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 27

दिन शनिवार

समय

सूर्योदय से पूर्व

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

दृश्य दूसरा

(आर्य सेवक तथा अपने राम कोठी के भीतर से आ कर, बरामदे में खड़े दक्षिण-दिशा की ओर निहार रहे है। सब से आगे लाला जेठ मल का प्रवेश, उनके पीछे चार कहार पालकी उठाए आ रहें हैं। पीछे पीछे दूसरे कुछ आर्य पुरुष भी हैं)

जेठमल — सेवक! अरे सेवक!!

आर्य से० — (भागकर पास आ, हाथ जोड़कर) नमस्ते जी! कहिये क्या आज्ञा है जी।

जेठमल — बस आज्ञा क्या? सब ठीक-ठाक है न?

आर्य से० — सब ठीक-ठाक है जी!

जेठमल — अरे अपने राम तुम भी यहीं हो? चलो अच्छा हुआ। ज़रा ध्यान रखना।

अपने रा० — (पास आकर नमस्ते करता हुआ) पूरा ध्यान है जी स्वामी जी के साथ जो आर्यपरुष आबू से यहां आये हैं, उनके स्नानादि के लिये सब प्रबन्ध कर दिया है जी।

आर्य से० — और शीत के कारण स्वामी जी के कमरे में अँगीठी भी रखवा दी है जी, ताकि कमरा गर्म रहे।

अपने रा० — ये कहार बड़ा धीरे-धीरे चलते हैं।

जेठमल — इसका भी कारण है। महाराज-श्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं। कहार तेज़ी करते है। तो महाराज-श्री को तकलीफ होती है। सुनो, सेवक! वह जो अँगीठी तुमने रखवा दी है न कमरे में, जल्दी से जा के

निकाल दो उसे। महाराज तो पहले ही गर्मी-गर्मी की रट लगाये हुए हैं।

(आर्य सेवक कोठी के भीतर जाता है)

अपने रा० इतनी सर्दी में गर्मी-गर्मी पुकारते हैं, स्वामी जी!

जेठमल यह सब विष का प्रभाव है। वह देखो, कहार फिर ठहर गए हैं, वह देखो, भूपाल सिंह महाराज-श्री को पंखा झुला रहें हैं।

(दोनों पालकी की और चल पड़ते हैं)

जेठमल क्यों अपने राम डाक्टर लछमन दास तो नहीं आये अभी? राम लाल जी उन्हें लिवा लाने गये थे।

अपने रा० नहीं जी, अभी तक तो कोई नहीं आया।

(पालकी के पास जाकर)

जेठमल क्या बात, ठाकुर साहब, रुक गये? कहीं स्वामी जी मूर्छित तो नहीं हो गये? अब तो भीतर ही चलते।

भू० सिंह हमें स्वामी जी का आदेश मिला था कि कोठी में प्रवेश करने से पहले रुक जाना। शायद ईशोपासना कर रहें हैं। मैं पंखा करने लगा तो मुझे हट जाने का आदेश दिया है।

(इस दौरान एक कहार अपने कन्धे पर डाली चद्दर को ठीक करता हुआ, सूत्रधार द्वारा बिछाये हुए उत्तरीय पर जा चढ़ता है। तभी दर्शकों को सुनाई पड़ता है)

आवाज़ इभी तो यो स्वामी बीमार पडयो सै। कहें सैं घणाई दस्त आ चुक्यां सैं। जाने, जब यो ठीक-ठाक होगा,

तो कितना के जब्बर होवैगा। खऊआ बी दूखण, लागि गिया। सुन्यो थो, जोधपुर मै पालकी की बैंत भी टूट 'गी थी, भार सै। सुन्यो, बाँस बाँधने पड़्यो थे। ठीक है, कहैं, बरमचारी रहयो सै।

भू० सिंह (कहारों से)

चलो उठाओ पालकी। ज़रा धीरे से। ए....हां!

शाबाश!

(जेठमल तथा अपने राम आगे आगे चलते हैं)

जेठमल (सीढ़ियों पर रुककर) यहां से ज़रा सावधन रहना। अपने राम तुम पिछली तरफ चले जाओ।

(इतने में एक वृद्ध, जो सबसे पीछे रह गया था। उस पटके पर आकर बैठ जाता है। स्वर सुनाई देता है)

वृद्ध स्वर हे प्रभो! आर्षज्ञान का प्रचारक, ब्रह्मचर्य का पोषक, भारतीय एकता का प्रतिपादक यह ऋषि दयानन्द अपने ज्ञानामृत से जन-मानस का सिंचन करता रहे।

आर्य से० (कोठी से बाहर आकर) नमस्ते इति बाबा।

इति बा० नमस्ते! बेटा मैंने कितनी बार तुम्हें बताया कि मुझे 'इति बाबा' न कहा कर। मेरा नाम इतिहास है, इति नहीं। जानता है 'इति' के अर्थ क्या हैं?

(सेवक का हाथ पकड़ कर उठता है)

आर्य से० नहीं जानता, इति बाबा। पर इनता विश्वास ज़रूर है, यह कोई अपमान-सूचक शब्द नहीं है।

इति बा० ओ नटखट तू मानता ही नहीं। 'इति' का अर्थ है

'समाप्ति'। तुम्हारे इस प्रकार बुलाने से तो अर्थ ही उलटे हो जाते हैं, मेरे नाम के। मैं हूँ 'इतिहास' इतिहास की इति कभी नहीं होती।

आर्य से० — और इतिहास बूढ़ा भी तो नहीं होता।

इति बा० — और इतिहास बूढ़ा हुआ ही कब है? क्या नाम भी कभी बूढ़े हुआ करते हैं? जिस 'शरीर' का नाम होता है, वह चाहे जर्जर हो जाय। इतिहास की घटनाएं पुरानी ज़रूर हो जाती हैं, और जीवन में नाम ही इतिहास है। शरीर तो एक घटना मात्र है, बेटा।

आर्य से० — ठीक है, इति बाबा। तुम्हारे हृदय में तो नई घटनाओं के प्रति इतना स्नेह भरा रहता है। क्या अपने बेटे को आप, स्नेह से 'इति बाबा' कह कर सम्बोधित कर सकने भर की भी आज्ञा नहीं दे सकते?

इति बा० — अरे तू तो मेरे को अपने स्नेह के बन्धन में जकड़े चला जा रहा है। ठीक है, जैसा जी में आये, पुकार।

आर्य से० — मेरे अच्छे बाबा! हमारा यह स्नेह तो स्वार्थ के लिए है। 'इतिहास' से प्रेम न करेंगे तो कुछ भी सीख न पायेंगे। आओ, अन्दर आओ, इति बाबा। स्वामी जी के बारे में आप से बहुत कुछ पूछना है। आओ, पहले दूध पिओ चलकर।

(हाथ पकड़कर अन्दर की ओर ले चलता है)

अपने रा० — (कहारों के साथ बाहर आकर) प्रसन्न हो न? कुछ और ज़रूरत हो तो बताना। कम तो नहीं?

कहार — जो कुछ तन्नै दे दिया सै, बाबू जी, वा ठीक सै।

परमात्मा थारे स्वामी जियां कूं जल्दी ठीक कर दे। म्हारे लायक कोई सेवा हो तो बतईये। हम तेरा से दूर नहीं स्यां। इक दूजा सै मिलकै दुःख-सुख कटया करियें सैं।

अपने रा० — अच्छा नमस्ते।

आर्य से० — (चद्दर लेकर आता हुआ) अरे रूड़िया यह चद्दर तो लेते जाओ, अपनी भूल गये यहीं पर।

कहार — धन्नवाद थारा, सेवक जी!

(जातें हैं)

आर्य से० — (अन्दर से आते हुए)

अरे रुकना, रूड़िया हो, यहां आओ यहां। स्वामी जी की कृपा हुई है आप पर। ये दुशाले ले के जाना।

(भीतर से लाए गए दुशालों को 'अपने राम' से पकड़कर कहारों को बाँटता हुआ)

आर्य से० — यह तुम्हारा, यह तुम्हारा, और यह तुम्हारा। अच्छा चलो हमारे स्वामी जी के स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना करना, समझे? कहार जी!

कहार — जी, सेवक जी! (हाथ जोड़कर) स्वामी जियां कूं डाकदर के हयां ले जाणा सै तो हम आ जयांगे। जब भी म्हारी लोड़ पड़े तो बुला लिये, चली आमां गे।

आर्य से० — नहीं! नहीं! डाक्टर के नहीं जाना। डाक्टर यहीं आ रहे हैं। (एक तरफ संकेत करके) लो, आ भी गए डाक्टर साहब।

(स्वागत के लिये आगे जा कर 'नमस्ते' करता हुआ)

नमस्ते डाक्टर साहब, आईये, पधारिये। स्वामी जी ने अभी अभी आप के बारे में पूछा था।

(डाक्टर से वक्सा लेकर आगे आगे चल पड़ता है)

ल० दास — कैसी तबीयत है, अब उनकी?

आर्य से० — जी! इतनी सर्दी में भी गर्मी-गर्मी पुकारते हैं। कमरे की सब खिड़कियां दरवाज़े खुलवा दिए हैं। बाकी आप साहब जांच करके ही ठीक पता लगा सकेंगे।

(रुक कर बिनती के स्वर में)

जल्दी से ठीक कर दें हमारे स्वामी जी को । फिर कोई 'अमृत' पिलाकर उन्हें चंगा कर दें न, डाक्टर साहब।

ल० दास — चलो देखते हैं।

(डाक्टर को अन्दर छोड़कर, इति बाबा को थामे आर्य सेवक मंच के बीच में जाता है)

इति बा० — अरे बेटा, यह 'अमृत' वाली बात तुम्हें कहां से पता चली?

आर्य से० — ज़िला अलीगढ़ के ठाकुर भूपाल सिंह जी से।

इति बा० — अच्छा! वे खारची में ही स्वामी जी से आ मिले थे। वहीं से महाराज के साथ हो लिये थे। रविवार को प्रातः जब महाराज ने पालकी द्वारा आबू पर्वत पर चढ़ाई शुरू की तो दो मील चलकर कहारों ने पालकी को सड़क के किनारे रख दिया और स्वयं विश्राम करने लगे।

आर्य से० — तब स्वामी जी की तबीयत भी ठीक रही होगी?

इति बा० — नहीं! ठीक नहीं थी। डाक्टर लछमनदास की अजमेर की बदली हो गई थी। वह घोड़ी पर चढ़ा, आबू पर्वत से नीचे आ रहा था। पालकी में भगवे वेष में पड़े स्वामी जी के बारे में जिज्ञासा करने पर उसे बताया गया कि उन्हें हिचकियां लगी हैं, संज्ञा रहित हैं और इसी अवस्था में दस्त निकल जाता है।

आर्य से० — तब स्वामी जी का रोग बड़ा भयंकर था। तभी ही शायद डाक्टर साहब ने कोई अमृत-तुल्य औषध दी होगी।

इति बा० — अरे, अमृत-तुल्य नहीं, बेटा अमृत! आँखें खुलते ही स्वयं स्वामी जी ने कहा, 'मुझे किसी ने अमृत दिया है, जिससे मेरी अचेतनता दूर हो गई है और जिह्वा भी खुल गई है।'

आर्य से० — बड़े अनुभवी डाक्टर हैं! कहां के हैं ये, इति बाबा?

इति बा० — पँजाब के शाहपुरा ज़िला के मीरा गाँव के रहने वाले हैं। अनुभवी ही नहीं, परोपकारी भी।

आर्य से० — वह कैसे, बाबा?

इति बा० — देखो पहले तो वहीं से यह निश्चस करके कि नौकरी रहे या न रहे, स्वामी जी की सेवा व चिकित्सा करने के लिए वापस आबू ही पहुँच गये। तीन दिन उनकी खूब सेवा की तथा ठीक चिकित्सा से स्वामी जी को ठीक भी कर लिया। चौथे दिन दो मास का बिना वेतन अवकाश लेने को अपने मैडिकल अफ़सर के पास गये। पर वह नहीं माना।

आर्य से० फिर क्या हुआ?

इति बा० फिर वही हुआ जो होना चाहिये था। लछमनदास बंगले पर आया, अपना त्याग-पत्र लिखा और उस निर्दयी अफ़सर को दे आने के लिऐ एक नौकर को पकड़ा दिया।

आर्य से० धन्य हैं ये डाक्टर साहब जिनके हृदय में हमारे स्वामी जी के प्रति इतनी अगाध श्रद्धा है कि अपनी उपजीविका तक को ठोकर मारने पर उतर आये। बाबा! क्या नौकर द्वारा भेजा त्याग-पत्र उस दुष्ट अफ़सर ने मनज़ूर कर दिया?

इति बा० मनज़ूर तो तब करता बेटा! जब वह उसके पास पहुँचता।

आर्य से० तो क्या नौकर त्याग-पत्र ले नहीं गया?

इति बा० नहीं! वह स्वामी जी ने देख लिया और अपने हाथ से उसे फाड़-डाला। स्वामी जी नहीं चाहते थे कि उनके कारण किसी को क्षति पहुँचे।

आर्य से० इति बाबा! स्वामी जी के परहित-चिन्तन की यह पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है?

इति बा० स्वामी जी का जीवन इस प्रकार की 'पराकाष्ठाओं' से भरा पड़ा है। उन्होंते तो बेटा, विष दिये जाने पर भी किसी का नाम नहीं लिया। परम दयालुता के कारण ही उन्होंने ऐसा किया। क्योंकि वे किसी के उपर संदेह प्रकट करते तो निकटवर्तियों की धर-पकड़ होती। मारपीट होती। जो उन्हें कभी अभीष्ट

न होती।

आर्य से० बाबा! फिर जब महाराज ने त्याग-पत्र फाड़ डाला तो लछमनदास जी ने क्या किया?

इति बा० उसने अगले दिन स्वयं अपने अफ़सर को अपना त्याग पत्र दिया। परन्तु उसने ना मनज़ूर कर दिया। फिर स्वामी जी के समझाने पर वह अजमेर चला गया। उस समय वह वियोग-दृश्य देखने लायक था। लछमनदास और स्वामी जी, दोनों की आंखें अश्रुपूर्ण थीं।

आर्य से० मगर बाबा, ये तुम्हारी आँखें क्यों डबडबा आई हैं?

इति बा० तुम नहीं जानते बेटा! किसी भी 'युगपुरुष' पर जब समय के कठोर प्रहार होते हैं तो 'इतिहास' की आँखें सजल हो ही जाया करती हैं।

अपने रा० (बरामदे से ही आवाज़ देता है) अरे सेवक भाई!

(फिर पास आकर कहता है) चलो, इति बाबा से ही सलाह ले लेते हैं। (पास बैठ कर)

क्यों बाबा, डाक्टर साहिब ने कहा है, स्वामी जी ने कोई अपथ्य किया है। महाराज को निमोनिया हो गया देखकर, चिकित्सा शुरू कर दी है। अब आप यह बतायें कि स्वामी जी द्वारा मार्ग में दही खाने की बात डाक्टर साहिब को बता देनी चाहिये या नहीं?

इति बा० देखो बेटा असूल तो यह है कि बता देना चाहिए, पर तुम कहते हो चिकित्सा शुरू कर दी है।

(फिर सेवक का हाथ पकड़ उठता हुआ)

सो पहली खुराक का प्रभाव देखो। फिर बता देना। डाक्टर को, और ज्यादा समझ के साथ, इलाज करने में मदद मिलेगी।

आर्य से० अपने राम! मैं बाबा को विश्राम के लिये छोड़कर अभी आया।

(दोनों का धीरे धीरे प्रस्थान)

(नटी का हाथ पकड़े सूत्रधार प्रवेश करता है)

सूत्रधार (एड़ियां उठाकर कोठी के भीतर देखता हुआ) ज़रा सावधानी से, आर्ये। लगता है स्वामी जी की आँख लग गई है। और लो धुले हुए कपड़े बाल्टी में भरे, ठाकुर भूपाल सिंह बाहर की ओर आ रहें हैं। हटो, ज़रा तेज़ी से वह उत्तरीय सीढ़ियों के पास कर दूँ।

नटी ठीक है, आर्यपुत्र! पता चलेगा ठाकुर साहब मन में कोई निरन्तर जाप कर रहें हैं या कुछ और सोच रहें हैं। महर्षि के प्रति इनकी भक्ति अनन्य है।

सूत्रधार हां! हां आर्ये! उन्होंने महर्षि की इस तरह की सेवा-सम्भाल की है कि कोई पुत्र अपने पिता की भी न करे। उनक मल-मूत्र उठाया है। मल से सने कपड़े धोये हैं, परन्तु क्या मजाल कि घृणा या ग्लानि का कोई भाव मन में उगा हो।

नटी जल्दी करो, आर्यपुत्र! चलो छिप जायें।

(भूपाल सिंह का प्रवेश)

(कपड़े आदि सुखाने के पश्चात्, उत्तरीय पर पाँव रख कर बैठ जाता है)

स्वर: हे ईश! हे प्रभो! हे करुणानिधे! मेरी इतनी सी बिनतीसुन लीजै, कि हमारे स्वामी जी की जल्दी ही सेहत ठीक हो जाये। मेरे प्रभो! मैं नहीं जानता, आपसे प्रार्थना भी किस विध की जाती है। सेवक हूँ। सेवा ही करनी जानता हूँ। हे ईश्वर! आप यदि साकार होते, तो आपके चरण पकड़ कर उतनी देर न छोड़ता जब तक आप हमारे स्वामी जी को स्वस्थ न कर देते। हे भगवान्, आप तो सर्वज्ञ हैं। फिर क्यों भूल रहे हैं कि भारत की बिगड़ी बनाने के लिए जो कार्य उन्होंने बीस वर्ष पूर्व आरम्भ किया था, वह अभी पूरा नहीं हुआ? दीनों की पुकार सुनने वाले, हे प्रभो! हमारे स्वामी जी की ओर से,अदीना: स्याम् शरद: शतम्, ही मेरी प्रार्थना है।

(यही मन्त्र वह बार-बार दोहराने लगता है कि कोठी के अन्दर से 'संध्या' पाठ सुनाई देता है। घुटनों पर बाहें, उनके उपर मस्तक रखकर कुछ देर सुनता रहता है फिर उठकर धीरे-धीरे अन्दर की ओर चलता है तो ऊँची आवाज़ में पढ़े जाने वाले, प्रात: काल आहुति के मन्त्र सुनाई देते हैं।)

मन्त्रों के स्वर

ओ३म सूर्यो ज्योति ज्योति : सूर्य: स्वाहा॥

ओ३म सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च : स्वाहा॥

ओ३म ज्योति : सूर्य : सूर्यो ज्योति : स्वाहा॥

ओ३म सजूर्देवेन सवित्रा सजरूषसेन्द्रवत्या॥

जुषाण : सूर्यो वेतु स्वाहा॥

॥ ओ३म् ॥

अंक दूसरा

दृश्य पहला

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 28

दिन रविवार

समय

सायंकाल

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

अंक दूसरा

दृश्य पहला

(संध्या के झुटपुटे में ठीक से न पहचाने जा सकने वाली आकृतियां कोठी के भीतर से बाहर तथा बाहर से अन्दर आती जाती दिखाई दे रही हैं। फिर 'संध्या' के स्वर सुनाई देने लगते हैं)

स्वर (सायंकाल आहुति के मन्त्र)

ओ३म् अग्नि ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा॥

अग्निर्वर्चो : ज्योतिर्वर्च : स्वाहा॥

ओ३म् अग्निः ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा॥

जुषाणें अग्निर्वेतु स्वाहा॥

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्रयेन्द्रवत्या॥

जुषाणों अग्निर्वेतु स्वाहा॥

(धीरे धीरे चलते इति बाबा का प्रवेश)

इति बा० ओ३म्।

(बैठता हुआ)

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः ॥

(अपने पीछे किसी की पदचाप सुनकर)

कौन? अपने राम?

(सूत्रधार व नटी का प्रवेश)

सूत्रधार नहीं बाबा, मैं।

(पाँव छूकर हाथ मस्तक से लगाता है)

नटी 'नमस्ते' बाबा।

इति बा० सौभाग्यवति भव। कहो बेटा, सूत्रधार! कैसे आना हुआ? किसी पात्र के बारे में चिन्ता हो गई है क्या?

सूत्रधार आपने ठीक जाना बाबा। एक दर्शक, दीर्घा से उठकर आप से एक प्रश्न पूछना चाहता है। समस्या खड़ी हो गई है, नाटक के 'अपात्र' को मंच पर पेश करने की। क्या किया जाये?

(सिर को पकड़ लेता है)

नटी हम नटियों के लिए तो यह बात और भी घातक सिद्ध होगी बाबा। देखिये न यदि पात्र इसी तरह से अपनी वेशभूषा आप जुटा कर, अपना श्रृंगारादि स्वयं करके मंच पर आने लगेंगे, तो हमारा धन्धा ही समाप्त नहीं

हो जायेगा? क्या ज़रूरत रह जायगी फिर हमारी?

इति बा० पर, बेटी! दर्शक भी क्या करेंगे जब उनको उनकी जिज्ञासा के उतर नहीं मिलेंगे?

सूत्रधार पर बाबा! यह कोई तरीका नहीं है, कि जब ही किसी दर्शक के मन में कोई प्रश्न उठे तो वह पूछने के बहाने नाटक का पात्र बनने की कोशिश करे।

नटी यह तो आप ही की भूल है, आर्यपुत्र! न आप 'अपने राम' को मंच पर आने देते, न आपको यह दूसरी मुसीबत झेलनी पड़ती।

इति बा० चलो जो हुआ, सो हुआ, बिटिया! अब बुलाओ उस दर्शक को। देखें, क्या कहता है।

नटी (सूत्रधार की ओर संकेत करके) आप बुलाइये न, आर्यपुत्र।

सूत्रधार (एड़ी उठाकर, दर्शक-दीर्घा की ओर किसी को बुलाने का संकेत करता है) जलदी आओ! दर्शक ऊब रहे हैं।

(दर्शकों में से एक भारी भरकम शरीर तथा तोंद वाला व्यक्ति मंच पर चढ़ने लगता है, गिर जाता है। फिर चढ़ता है और दर्शकों के साथ आप ही हँसने लगता है तथा इति बाबा के पास, दर्शकों की ओर मुँह करके कहता है)

मोटू (तोंद पर हाथ फिराता हुआ) देखो, इतिहास बाबा! कल ठाकुर भूपाल सिंह की प्रार्थना से जानकारी

मिली कि स्वामी जी को अपना कार्य आरम्भ किये अभी बीस वर्ष ही हुए हैं। मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ।

इति बा० क्यों?

मोटू (पेट पर हाथ फिराता हुआ) देखो बाबा, मैने भी पढ़कर बहुत कुछ पचा रखा है। स्वामी जी के बारे में तो विशेषकर।

इति बा० समय नष्ट न करो। अपना मन्तव्य बताओ, जल्दी।

मोटू मन्तव्य मेरा स्पष्ट है। स्वामी जी को जब शिवरात्रि वाली रात ज्ञान-प्रकाश हुआ तो उनकी आयु तेरह वर्ष थी, थी कि नहीं थी?

इति बा० थी।

मोटू इसके पाँच वर्ष पीछे जब वे अपने किसी बन्धु के यहां नृत्योत्सव देख रहे थे और जब उन्हें अपनी चौदह वर्ष की भगिनी, जिसकी उनके घर पहुँचने के पश्चात् मृत्यु हो गई थी, के बारे में पता चला था तो वे कितने वर्ष के थे?

नटी यह तो सीधी सी बात है, अठारह वर्ष।

मोटू आप बीच में मत बोलें जी। अच्छा, इतिहास बाबा! जबकि सारा परिवार रुदन-क्रन्दन कर रहा था तो स्वामी जी पाषाण-निर्मित मूर्त्ति के समान अविचलित रहकर चिन्ता के स्रोत में डूबे हुए थे कि नहीं थे?

इति बा० यह सब सत्य है। इस घटना के बारे में स्वामी जी ने स्वयं लिखा है। पर इसका तुम्हारे प्रश्न से......

मोटू मेरे प्रश्न से सम्बन्ध है बाबा! अच्छा, फिर थोड़े दिन पीछे, जब इनके चचा, जो कि स्वामी जी को बहुत स्नेह करते थे, भी स्वर्गवासी हुये तो, महाराज श्री के मन में वैराग्य का उदय हुआ था कि नहीं हुआ था?

इति बा० हुआ था। स्वामी जी के अनुसार, उनके मन में आया कि संसार की सारी वस्तुएं अस्थायी और क्षणभंगुर हैं, तब ऐसी वस्तु कौन है जिसके लिए संसार में रहकर सांसारिक लोगों के समान जीवन-यापन करूँ।

मोटू मेरे मन्तव्य की ओर बाबा, अब आप स्वयं ही अग्रसर हो रहे हैं।

इति बा० जब वे उन्नीस-बीस के थे तो सांसारिक सम्बन्ध को निरविच्छिन्न कर देने के विषय में उनके चित्त में निरन्तर संग्राम होने लगा।

मोटू और, फिर उन्होंने इसी कारण से 'जमेदारी' का काम सम्भालने से इन्कार किया कि नहीं?

इति बा० अवश्य किया।

सूत्रधार यूँ तो उन्होंने माता-पिता द्वारा अपना विवाह कर देने से भी इन्कार कर दिया था।

मोटू आदरणीय सूत्रधार जी कृपया आप बीच में न बोलें।

सूत्रधार	चलो आर्ये! यह जन, नाटक का पात्र बनने का अवसर प्रदान किये जाने पर धन्यवाद देने के स्थान कर उलटा हमें ही चुप करा रहा है। अच्छा महाशय!
	(सूत्रधार और नटी 'नमस्ते' करके चले जाते हैं)
मोटू	गये। चलो अच्छा हुआ। तो बाबा जब स्वामी जी ने उस वैराग्य-बह्नी में तपकर कुन्दन बन जाने पर गृह-त्याग किया तो उनकी कितनी आयु थी?
इति बा०	बाईस वर्ष। उनका जन्म सन् 1824 में हुया था, और 1846 ई. में वे सदा-सदा के लिये घर को छोड़ गये।
मोटू	(पास बैठता हुआ) तो 1846 में उन्होंने ने, जो कार्य आरम्भ किया, उसको आज 1883 में बीस वर्ष कैसे हुए? सैतीस वर्ष कैसे नहीं हुए? कौन है इस नाटक का लेखक, कहां है वह। (उठकर) अजी ओ, सूत्रधार जी! दर्शक, यह सत्रह साल का घेटाला बर्दाशत नहीं करेंगे (दर्शकों की ओर इंगित करे) क्यों भाइयो?
	(नेपथ्य से सूत्रधार की आवाज़)
आवाज़	अरे ओ मोटू! दर्शक-दीर्घा में तेरा स्थान किसी ने रोक लिया है...।
इति बा०	सुना?
मोटू	सुन लिया, बाबा! अच्छा अब चलता हूँ। प्रश्न का उत्तर मैं 'इतिहास' में स्वयं ढूँढ लूँगा।
	(भागने लगता है, पर, गिर जाता है। सूत्रधार और

	नटी आ कर उसे उठाते हैं)
सूत्रधार	अधिक शंकालु इसी प्रकार गिरते हैं।
नटी	संतोष रखने वालों तथा प्रतीक्षा कर सकने वालों को शंकाओं के उत्तर स्वयं मिल जाया करते हैं।
इति बा०	नहीं बेटा! शंकाएं न होतीं, जिज्ञासाएं उत्पन्न न होतीं तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में कोई अनुसन्धान ही न हो पाता। जीवन का विकास ही रुक जाता।
	(प्यार से) यहां आओ, बेटे! चोट तो नहीं आई? मेरे पास बैठो। जाओ तुम दोनों दूसरे दृश्य की तैयारी करो।
	(सूत्रधार व नटी का प्रस्थान)
मोटू	नहीं, बाबा! अपने लिए चौड़ी सी कुर्सी रखवाई थी। रुक गई तो फिर कहां बैठ के देखूँगा नाटक?
	(जाता है)
	(इति बाबा लेट जाता है। कोठी में से, बरामदे में लटक रही लालटेन को उठाकर, आर्य सेवक लाठी लेकर मंच के मध्य में आकर इति बाबा की ओर मुड़ता है, पास जाकर)
आर्य से०	सो गये क्या बाबा?
इति बा०	नहीं बेटा! इतिहास कभी भी सोता नहीं है। हां, चुप अवश्य हो जाता है, कभी-कभी। कैसा स्वास्थ्य है महाराज-श्री का?

आर्य से०　अब तो सोये हुए हैं। डाक्टर लछमन दास जी ने सम्भाल लिया है उन्हें। पर पता नहीं स्वामी जी बार-बार अपथ्य क्यों करते हैं। अपने राम ने आज सुबह नौ बजे, महाराज-श्री द्वारा मार्ग में दही खा लेने की बात बता दी थी।

इति बा०　ठीक है। डाक्टर से यदि कुछ छुपाया न जाये तो चिकित्सा आसान हो जाती है। अपथ्य से तो रोग बढ़ता ही है।

आर्य से०　और आज भी स्वामी जी ने अपथ्य किया। डाक्टर साहब ने कमरे में आग सुलगवा कर इसे गर्म कर रखा था। किसी कार्य के लिये उन्हें कहीं बाहर जाना पड़ा, तो हम से अपना पलंग दरवाज़े के पास डालने को कहा। हमने ज़रा अनाकानी की तो डांट दिया।

इति बा०　तो आज, तुम्हें और अपने राम, दोनों को दो बार डांट खानी पड़ी। एक बार स्वामी जी से तथा दूसरी बार डाक्टर लछमनदास से!

आर्य से०　हां बाबा! पर आपको कैसे मालूम हुआ?

इति बा०　लो! कैसे मालूम हुआ? अरे एक बार की बाबत तूने स्वयं बता ही दिया है। दूसरी बार की बाबत अनुमान से जान लिया, मैंने, कि डाक्टर जैसा सत्संकल्पी व्यक्ति कभी नहीं चाहेगा कि स्वामी जी को अपथ्य करने की मनमानी करने दी जाये। सो, उसने अवश्य तुम्हें डांट पिलाई होगी।

आर्य से०　यह किसी भी ईमानदार डाक्टर की निशानी है, इति

बाबा! आखिर, इसमें उनका कोई स्वार्थ तो है नहीं।

इति बा०　अरे तू अकेले डाक्टर के स्वार्थ की बात करता है। उस भलेमानस के इस व्यवहार में तो हम सबका स्वार्थ है।

आर्य से०　(हैरानी से) कैसे? यह बात मेरी समझ में नहीं आई, इति बाबा!

इति बा०　इसमें समझने की क्या बात है बेटा? क्या आज कोई भी आर्य-पुरुष यह चाहता है कि स्वामी जी जल्दी स्वस्थ न हों?

आर्य से०　नहीं, बाबा।

इति बा०　तो फिर स्वामी जी को अपथ्य न करने देने में हमारा सबका स्वार्थ निहित हुआ कि नहीं? इस सदेच्छा-पूर्ण व्यवहार के लिये तो डाक्टर लछमनदास को ईनाम दिया जाना चाहिए।

आर्य से०　पर मेरा विचार है, बाबा, कि ऐसा व्यक्ति ईनाम-विनाम के चक्कर में नहीं पड़ेगा। ऐसा जन तो, यदि उसके वश की बात हो तो, स्वामी जी के एक-एक रोम पर सहस्रों रुपये न्योछावर कर दे।

(नेपथ्य में किसी के भागने की आवाज़ से चौंककर उठता हुआ)

कौन है? (लाठी लेकर उस ओर भागकर जाता है)

इति बा०　(उठकर, लालटैन उठाता हुआ) इस समय यह कौन

हो सकता है?

(आहिस्ता आहिस्ता नेपथ्य की ओर बढ़ता है)

(तभी आर्य सेवक एक मैले-कुचैले आदमी को गर्दन से पकड़कर स्टेज़ पर लाता है। वह 'छोड़ दो छोड़ दो' की रट लगाये हुए है)

आर्य से० 'छोड़ दो' के बच्चे, ज़रा मुँह तो दिखा अपना।

(लाठी को अपने कन्धे के सहारे टिका कर उसका मुँडासा खोलता हुआ) आया था यहां?

(बाहें हटाता है)

इति बा० (लालटैन चेहरे के और पास ले जा कर) अरे कौन? तू कलुआ नहीं क्या? चल इधर आ। क्या करने आया था यहां?

आर्य से० कौन है, बाबा? इसको तो मैने भी लगता है कहीं देखा है।

इति बा० नहीं, तूने नहीं देखा होगा इसे। ये है, कलुआ कहार, जो स्वामी जी की सेवा में था, जोधपुर।

आर्य से० वही, जिसने कि स्वामी जी का एक दुशाला और दो अशर्फ़ियां चुरा ली थीं?

इति बा० हां, हां यह व्यक्ति तो वही है जिसके ऊपर चोरी का लांछन लगा था। वास्तव में चोरी इसने नहीं की थी।

कलुआ (एक झटके से अपने आप को आर्य सेवक के पंजे से छुड़ाकर 'इति बाबा' के चरणों में गिर पड़ता है)

मुझे बचा लो, बाबा। आपको तो सब कुछ पता है।

इति बा० (बांह से पकड़कर उठाता हुआ) चोरी तूने नहीं की थी, यह तो मैं जानता हूँ। पर अब, यहाँ इतनी रात गए तुम्हारे यहां आने का प्रयोजन नहीं जानता। और जोधपुर वाली सारी बात भी तू अपने मुख से आर्य सेवक को बता।

कलुआ (आर्य सेवक के आगे हाथ जोड़ता हुआ) बात यह है, सेवक भइया कि आज से पूरे बत्तीस दिन पहले, बहुत सवेरे जब अभी अन्धेरा ई था तो भैया फैजुल्ला खां का भतीजा मोहम्मद हुसैन मेरी कोठड़ी पर आया और एक पत्र, एक पोटली तथा पांच रुपये मुझे थमा कर कहने लगा कि राव राजा तेज सिंह का हुक्म है कि इस पत्र का उत्तर ले कर आना है, चाहे कितने ही दिन लग जाएं।

आर्य से० उन्हीं मुसाहिबे-आला का भतीजा, जिनके बाग में महाराज-श्री का निवास था।

कलुआ हां, उन्हीं का। कहने लगा अभी निकल जाओ। जंगल दिशा रास्ते में ही होना। और, उसने एक दूसरी पोटली भी मुझे दी, जिसमें कुछ 'शकरपारे' बन्धे थे। कहने लगा कि रास्ते में भूख लगे तो खा लेना।

इति बा० और तुम चले गये, कलुआ। रामानन्द ब्रह्मचारी. जब, स्वामी जी के फांकने के लिए सौंफ देकर, स्नान करने गया और जब स्वामी जी भी पाँच बजे भ्रमणार्थ बाहर चले गये तो उन्होंने माली से महाराज के कमरे में

चोरी करवा दी, जो तुम्हारे नाम लग गई।

आर्य से० माली जुम्मन था, काले मियां का बेटा।

इति बा० तुम्हें कैसे मालुम हुआ?

आर्य से० कल जेठमल जी डाक्टर साहब को कुछ बता रहे थे, मैंने सुन लिया। और आज, भगत राम जज तथा सरदार भगत सिंह एग्जीक्यूटिव इञ्जीनियर जब डाक्टर लछमनदास की प्रशंसा महाराज के श्री-मुख से सुन रहे थे तो, हमें विरोधियों के छल के बारे में भी उनसे सुनने को मिला। लगता है, स्वामी जी को विरोधियों ही पर संदेह है, विष दिये जाने का।

कलुआ उनका संदेह सही है, भइया!

इति बा० कलुआ ठीक कहता है। स्वामी जी जब जोधपुर पहुँचे थे तो दूसरे दिन से ही उन्होंने व्याख्यान देने आरम्भ कर दिये थे। एक दिन जब वे अपने व्याख्यान में ईसाई-मत की आलोचना करने लगे तो, यही मोहम्मद हुसैन, तलवार की मूठ पर हाथ रख कर स्वामी जी से बोला कि आप हमारे मत के बारे में कुछ भी ना बोलना।

आर्य से० फिर?

इति बा० फिर क्या? स्वामी जी क्या ऐसी गीदड़ भभकियों से डरने वाले थे। उसे खूब बेशर्म किया, और अपने उसी व्याख्यान में उनके-धर्म की कड़ी आलोचना की। उनको सबसे बड़े मूर्तिपूजक कहा।

कलुआ हां, हां, इति बाबा। इसी कारण लगभग वहां के सभी मुसलमान महाराज के शत्रु हो गये। तथा विरोधी बढ़ गये।

इति बा० परन्तु चोरी के केस में ब्रह्मचारी रामानन्द को पकड़वा कर महाराज को बिल्कुल अकेला कर देने की उनकी योजना सफल न हो सकी। क्योंकि महाराज ने साफ कह दिया था कि चोरी के बारे में उनका किसी पर भी कोई संदेह नहीं है।

आर्य से० पर कलुआ! आज इस समय तू यहां क्या करने आया था?

कलुआ यहां आया था यह देने (बगल से कुछ निकालता हुआ) सोचा था, इस समय स्वामी जी अकेले होंगे, क्यों जो दिन में तो आज बहुत से लोग महाराज-श्री की खबर लेने आते रहे, इतवार था न आज।

(पोटली आर्य सेवक की तरफ बढ़ाता है, वह पकड़ लेता है।)

इति बा० (पोटली स्वयं लेकर टटोलता हुआ)

अरे, बता तो सही क्या है इसमें? (पोटली सेवक को दे देता है)

कलुआ (आँसुओं से सजल हो गये नेत्रों को पोंछता हुआ)

इसमें वही 'अशर्फ़ियां और दुशाला' है, जिनके कारण सबने मुझे चोर समझा था। और जिनके कारण मुझे मोहम्मद हुसैन पर ज़रा भी शक नहीं हुआ कि वह

राव राजा तेज सिंह की आज्ञा नहीं, विरोधियों की बनाई एक साज़िश थी।

इति बा० — और, जिस साज़िश का शिकार स्वामी जी को भी होना पड़ा। मुझे लगता है कि कलुआ, तुम्हें यह भी मालूम है कि अगले दिन ब्रह्मचारी रामानन्द, वहां स्वामी जी के पास दूध क्यों नहीं ले के गया और विष मिला दूध धौड़ मिश्र के हाथों स्वामी जी तक कैसे पहुँचा?

कलुआ — मुझे मालुम है बाबा! स्वंय धौड़ मिश्र की विधवा ने बताया है।

इति बा० — तो क्या धौड़ मिश्र नहीं रहा! ओह! वह रहस्य जिस से पर्दा उठ सकता था, वह अब रहस्य ही रहेगा।

कलुआ — रहस्य यह अब भी नहीं रहा, बाबा। धौड़ मिश्र अपनी पत्नी को सब कुछ बता गया है। वह पाली स्टेशन पर अपने देवर के पास रहती है, बेलदार लगा हुआ है, वह। और वह स्टेशन मास्टर की रसोई संभालती है।

आर्य से० — कलुआ! तू उसको एक दिन, यहां लेकर आ। बल्कि, तू रात की गाड़ी से पाली चला जा। और पोटली भी तू फिर आकर स्वयं स्वामी जी को लौटाना।

(पोटली उसकी ओर करता है)

इति बा० — इसे रहने दे। पाली ही अगर इसे जाना है तो मत रोक। गाड़ी का समय है।

आर्य से० — कल को ही लौटने की कोशिश करना, कलुआ। आने पर सबकी शंकाओं का समाधान हो जाएगा और तुमसे भी अभी बहुत कुछ पूछना बाकी है।

कलुआ — अच्छा! अच्छा!! अच्छा, नमस्ते बाबा!!

(जाता है)

(इति बाबा और आर्य सेवक नीचे बैठकर पोटली खोलने लगते हैं। धीरे-धीरे अन्धेरा हो जाता है।)

॥ ओ३म् ॥

अंक दूसरा

दृश्य दूसरा

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 29

दिन सोमवार

समय

मध्य-रात्रि से एक घण्टा पूर्व

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

दृश्य दूसरा

(मंच पर कोई सोया हुआ है। कोठी के अन्दर अन्धेरा है परन्तु बरामदे में कोई जना, लटक रही लालटैन के पास खड़ा कोई पत्रादि पढ़ रहा है। घाघरे को इस प्रकार पकड़े जैसे उसे पानी में भीग जाने का डर हो, नटी, पायज़ेब का शब्द किये बिना मंच पर आती है।

नटी (धीमे स्वर में) यह कौन सो रहा है? (देखकर) अच्छा, इति बाबा हैं! आर्यपुत्र तो कहते थे 'इतिहास' कभी नहीं सोता। (बाबा की ओर इंगित करके) कदाचित सो न रहें हों, सोच ही रहे हों, दोनों हालतों में ही मेरा बोलना उचित नहीं। मैं भी चुपचाप बैठ जाती हूँ। (बैठ जाती है)(झट से पुनः उठती है) नहीं यहां नहीं। आर्यपुत्र के उत्तरीय पर बैठती हूँ ताकि दर्शक ऊब न जाएं। कम से कम मेरे मानस में चल रही ऊहा-पूह तो उन्हें सुनाई देती रहेगी।

(एक तरफ पड़े उत्तरीय पर चिन्तन-मुद्रा में बैठ जाती है। नटी का स्वर सुनाई देता है।)

स्वर हे भगवान्! अब क्या करूँ? किस से पूछूँ? आर्यपुत्र कुछ समस्याओं का हल ढूँढने के लिए नाटककार से मिलने गये थे। अभी तक नहीं लौटे। इधर इति बाबा सोये पड़े हैं। पूछूँ तो किससे पूछूँ? बड़ी मुसीबत आ गई है। नाटक के दूसरे अंक का दूसरा दृश्य पेश

करना है, पर श्रृंगार-कक्ष से वेशभूषा तथा रूप-सज्जा का सारा सामान चोरी हो गया है। पात्र तैयार नहीं होंगे तो, नाटक शुरू नहीं हो सकेगा। नाटक शुरू नहीं होगा तो दर्शक ऊब जायेंगे। दर्शक ऊब जायेंगे तो कुर्सियां तोड़ डालेंगे। कुर्सियां टूट जायेंगी तो रंगशाला का नुकसान होगा। रंगशाला का नुकसान होगा तो सूत्रधार को पकड़ा जाएगा, सूत्रधार पकड़ा गया तो नटी क्या करेगी?

नटी — (तन्द्रा सी टूटने पर, ऊंची आवाज़ में) तो नटी क्या करेगी?

इति बा० — क्या हुआ बेटी? स्वप्न आया है क्या?

नटी — नहीं बाबा, स्वप्न जागते में थोड़ी आते हैं।

इति बा० — तू सो गयी थी बेटी। मैं देख रहा था। क्या समस्या आ गई है।

नटी — देखो बाबा लेखक के अनुसार इस दृश्य में 29 तारीख को लाहौर से पधारे पंडित गुरूदत्त तथा लाला जीवन दास तथा उदयपुर से आये पंडित मोडन लाल विष्णु लाल पंडया को पेश करना था। नाटककार ने निर्देश देकर उनके अनुकूल वेशभूषा तैयार करवाई थी।

इति बा० — ठीक है। तो करो न जा के तैयारी।

नटी — तैयारी किस प्रकार करूँ, बाबा? सभी वेशभूषायें तथा दूसरी आवश्यक सामग्री चोरी हो गई है। (झुंझलाकर) मैं तो फंस गई हूँ, बाबा।

इति बा० — देखो! ये नाटककार साधारण मनुष्य नहीं होते। सूत्रधार वहां समस्या का हल ढूँढने गया है। वहां तो, बेटी, समस्या और उलझ गई होगी। हम नाटक शुरू रखते हैं। दर्शकों को उलझाए रखने का काम मेरा। पर एक शर्त है।

नटी — वह क्या?

इति बा० — बस उस मोटे राम को फिर बुला दे, मंच पर।

नटी — देखती हूँ, बाबा, कहीं खुर्राटे ही न भर रहा हो।

(एड़ी उठाकर तथा आँख पर हाथ का छज्जा सा बनाकर, ज़रा ज़ोर से आवाज़ लगाती है) अरे ओ मोटू राम जी! (हाथ जोड़कर) कृपया मंच पर पधारने का कष्ट करें। आप के साईज की कुर्सी, मंच पर मैं स्वयं डलवा रहीं हूँ।

(नेपथ्य से कुर्सी लाकर मंच पर रखती है)

आईये, पधारिये।

(नटी के पीछे पीछे मोटू का प्रवेश)

मोटू — इस बार दूसरे मार्ग से आया। पहले गिर गया था न।

(ऊँची आवाज़ में हँसता है) हमारे लिये चढ़ना-उतरना ज़रा....

(फिर हँसता है, मोटू के कुर्सी पर बैठते ही नटी जाती है)

इति बा० — कभी व्यायाम करते हो?

मोटू नहीं।

इति बा० प्राणायाम करते हो?

मोटू नहीं।

इति बा० और क्या करते हो?

मोटू अध्ययन करता हूँ, बस।

इति बा० किस चीज़ का अध्ययन करते हो?

मोटू साहित्य का, इतिहास का, धर्म का।

इति बा० किस धर्म को मानते हो?

मोटू वैदिक धर्म को।

इति बा० फिर भी स्वामी जी के जीवन के बारे में पूरा नहीं जान पाए।

मोटू जितना जान सका जान लिया। और-अधिक जानने की जिज्ञासा मन में है।

इति बा० जिज्ञासा है, तो प्राप्ति भी होगी। पहले मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर दो।

मोटू पूछो बाबा।

इति बा० स्वामी जी का पहला नाम क्या था?

मोटू मूल जी नाम था। उनके पिता का नाम था, कर्शन जी त्रिवाड़ी। वे टंकारा के जीवापुर मुहल्ले में रहते थे। वे लेन-देन का व्योपार करते थे तथा भूमि-सम्पत्ति के मालिक थे। आज से दस वर्ष पहले अर्थात 1873

में जब स्वामी जी कलकत्ता में थे तो उन्होंने स्वयं संकेत दिया कि उनके पिता जमेदार थे। वह धर्म निष्ठ थे, शिव-भक्त...

इति बा० बस, बस, बस। जितना पूछूँ उतनी बात बताओ। यहां तक सबको मालूम है कि शिवरात्री की रात जब स्वामी जी ने चूहे को विताड़ित कर सकने में 'महादेव' की असमर्थता देखी तो मूर्तिपूजा से उनका विश्वास उठ गया। और यह घटना भारत से मूर्तिपूजा-उन्मूलन के उनके संकल्प का आधार बन गई। पर मेरा प्रश्न था, स्वामी जी मूल जी से 'शुद्ध चैतन्य' कब बने?

मोटू टंकारा से चलकर स्वामी जी शैला पहुँचे। यहां उन्होंने सोने चांदी के आभूषण ब्राह्मण-भिक्षुओं को दे दिये। फिर कोटगंगारा पहुँचने से पहले शैला में एक ब्रह्मचारी से उनका परिचय हो गया। इसी ब्रह्मचारी ने इन्हें दीक्षित करके 'शुद्ध चैतन्य' नाम दिया।

इति बा० ठीक है, इसके बाद वे अपने माता पिता से मिले कि नहीं?

मोटू माता से नहीं, पिता से अवश्य मिले।

इति बा० वह कैसे?

मोटू सत्संग का लाभ उठाने के लोभ से प्रेरित होकर स्वामी जी सिद्धपुर के मेले में पहुंच गये। यहां उन्हें किसी परिचित ने देख लिया। इस वैरागी ने स्वामी जी के पिता जी को जा बताया। वे कई सिपाहियों को साथ लेकर सिद्धपुर पहुंच गये और 'नीलकण्ठ' के

मन्दिर में साधुओं की संगत में बैठे स्वामी जी को जा पकड़ा। स्वामी जी के ब्रह्मचारियों जैसे कपड़े उतार कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। और तूँबी को छीन कर दूर फेंक दिया।

इति बा० फिर, क्या कर्शन जी त्रिवाड़ी, शुद्ध चैतन्य को घर लिवा ले गये?

मोटू नहीं बाबा! उसी रात को तीन बजे अपने पिता तथा सिपाहियों को सोता छोड़, स्वामी जी अहमदाबाद पहुँच गये। वहां से बड़ौदा।

इति बा० ठीक है। अगला प्रश्न है : वे शुद्ध चैतन्य से दयानन्द सरस्वती कब, कहां और कैसे बन गये?

मोटू बड़ौदा से स्वामी जी नर्मदा-तीर पर स्थित चाणोद-कर्णाली के लिए चल पड़े। वहां परमानंद परमहंस से शिक्षा ली तथा वेदान्तसार और वेदान्त-परिभाषा के ग्रन्थ पढ़े। और एक दक्षिणी पण्डित की सिफ़ारिश से महाराष्ट्र के स्वामी पूर्णानन्द जी से दीक्षित होकर 'दयानन्द सरस्वती' हो गये।

इति बा० अच्छा, तो वे योगी कैसे बने?

मोटू चाणोद से वे व्यासाश्रम चले गये वहां एक योग-विशारद योगानन्द से योग शिक्षा प्राप्त की। वहां से फिर चाणोद आ गये। वहां आपको शिवानन्द गिरि तथा ज्वालान्नद पुरी नाम के दो योगी मिले, जिनसे मिल कर योगाभ्यास में लग गये। ये योगी जाने लगे तो स्वामी जी को कह गये कि एक मास पीछे आना,

अहमदाबाद के दुग्धेश्वर के मन्दिर में। सो उत्सुकता पूर्वक स्वामी जी वहां पहुंचे तो उनको योग-विद्या के रहस्य और चरम-प्रणाली के विषय में शिक्षा प्राप्त हुई। और वे योगी बन गये।

इति बा० इसी लिये स्वामी जी ने स्वयं लिखा कि योगविद्या की जो भी क्रियागत शिक्षा थी, वह मैंने, उन्हीं दोनों साधुओं से पाई है और उनके कृतज्ञता-पाश में बद्ध रहा हूँ।

(दर्शकों की ओर से आवाज़ आती है)

आवाज़ पर योग विषय में स्वामी जी की तृप्ति तो हुई नहीं। नहीं तो, क्यों वे आबू पर्वत पर जाते, योगियों की तलाश में, और क्यों वे जाते उत्तराखण्ड, सिद्ध तापसों का निवास समझ के?

(सूत्रधार व नटी नेपथ्य से आकर)

दोनों तू भी आ जा भई! आ, आ स्टेज पर आकर बोल क्या बोलता है।

(दर्शकों में से एक मरीयल सा युवक मंच पर आता है)

इति बा० ये ऐनक क्यों लगा रखी है?

युवक विद्या रूपी तीसरा नेत्र प्राप्त करने की कोशिश में दो नेत्र भी जाने लगे, सो उनकी रक्षार्थ लगाई है।

इति बा० तो तुम भी विद्यार्थी हो?

युवक — जी, बाबा।

इति बा० — विशेष रुचि?

युवक — इतिहास।

इति बा० — इतिहास की परिभाषा कर सकते हो?

युवक — क्यों नहीं? इतिहास घटनाओं तथा तिथियों का वह समूह है जिनके मध्य में पाए जाने वाले खप्पे पाठक या विद्यार्थी को स्वयं भरने होते हैं।

इति बा० — अच्छा यह बताओ, जीवनी इतिहास होता है कि नहीं?

युवक — होता भी है, नहीं भी।

इति बा० — वह कैसे? व्याख्या करो।

युवक — जीवनी में जब मात्र निजी घटनाएँ और अधिकत: निजी अनुभवों का व्यौरा हो तो वह इतिहास नहीं होती। जीवनी, इतिहास बन जाती है जब उसमें समय तथा समाज से सम्बन्धित व्यौरा हो।

मोटू — तो तुम्हारा मतलब है, स्वामी जी की जीवनी शुरु से लेकर अन्त तक इतिहास ही है।

युवक — हां है। बताओ क्यों नहीं है?

इति बा० — अच्छा, यह बताओ। इसे इतिहास मानते ही हो, या जानते भी हो?

युवक — जानता क्यों नहीं, सारे तथ्य अँगुलियों पर हैं। पूछिये

आप।

इति बा० — अच्छा यह बताओ, उत्तराखण्ड से नीचे उत्तर कर उन्हें योगबीज, हठ-प्रदीपका आदि ग्रंथों में वर्णित विषय की असत्यता का ज्ञान कैसे हुआ?

युवक — गढ़मुक्तेश्वर अवस्थिति के समय गंगा में बहे जा रहे शव की चीर-फाड़ करने से।

इति बा० — चीरफाड़ से स्वामी जी ने क्या जाना?

युवक — यही कि उन ग्रन्थों में वर्णित 'नाड़ी चक्र' का शव में कहीं अस्तित्व ही नहीं है।

मोटू — हां, मुझे भी याद आया। तब स्वामी जी ने उन सब झूठ से भरे ग्रन्थों को उस चीरे-फाड़े शव के साथ ही गंगा में बहा दिया। इसके साथ ही, जैसे पानी में कोई चीज़ बहा रहा हो ऐसा अभिनय-करता है और कुर्सी लुढ़क जाती है युवक तथा सूत्रधार उठाते हैं, तो मोटू हँसे चला जा रहा है। नटी कुर्सी सीधी करती है)

आर्य से० — (कोठी के अन्दर से बाहर आकर) डाक्टर साहब की बात सच्ची निकली बाबा। (घबराये हुए स्वर में) पता नहीं ईश्वर की क्या इच्छा है?

इति बा० — क्यों क्या हुआ?

मोटू — (हड़बड़ाकर) स्वामी जी की तबीयत तो अच्छी है?

युवक — तो क्या.....

नटी — (हाथ जोड़ती हुई) आप दोनों कृपया, अपने-अपने स्थान पर चले जाएं। लगता है घटनाएं भी नाटककार से विद्रोह कर गई हैं।

(दोनों मुँह लटकाए उठ जाते हैं)

आर्य से० — कल, जब जज साहब तथा इँजीनियर साहब कचहरी जाने के लिये स्वामी जी से आज्ञा मांगने लगे तो महाराज-श्री कहने लगे : हमें मसूदा ले चलो। जब उन महानुभाव ने कहा कि स्वामी जी आप-श्री की तबीयत ठीक नहीं है। चंगे हो जाओ तो ले चलेंगे। बोले, दो दिन में चंगे हो जायेंगे।

इति बा० — तो हो नहीं गये थे चंगे? डाक्टर लछमनदास के प्रयत्न से वे निरोगता की ओर आ तो गये थे आज। रात भी उन्होंने पूरी नींद ली। कोई तकलीफ नहीं थी।

आर्य से० — सायंकाल तक ठीक थे। डाक्टर साहब राय भागमल की कोठी पर भोजन करने गये तो हम सब को चेता गये कि देखना, कहीं स्वामी जी को ठण्डी हवा......

इति बा० — ओ हो! लगता है स्वामी जी ने पुनः कुपथ्य किया।

आर्य से० — और नहीं तो क्या। इधर डाक्टर बाहर निकले, उधर स्वामी जी ने पलंग बाहर बरामदे में निकलवाने की ज़िद्द पकड़ी। ज़िद्द भी ऐसी कि पलंग बाहर निकलवा कर छोड़ा।

सूत्रधार — क्या वे लाहौर वाले दोनों महानुभाव तथा उदयपुर वाले पंड्या जी ने भी स्वामी जी को ऐसा करने से

रुक जाने की प्रार्थना नहीं की?

आर्य से० — बहुत अनुनय-विनय की। पर स्वामी जी नहीं माने। फिर जब डाक्टर साहब लौटे तो महाराज-श्री बैठे पंड्या जी तथा दूसरे आर्य जनों को शुद्ध वायु की महत्ता बता रहे थे।

सूत्रधार — फिर तो महाराज को और भी थकन हो गई होगी।

आर्य से० — थकन तो होनी ही थी, सर्दी भी लग गई। सुधरा हुआ स्वास्थ्य फिर बिगड़ गया।

नटी — (अन्दर की ओर जाने लगती है) मैं देखूँ, अब उनका क्या हाल है?

आर्य से० — अरे न, न। देखना कहीं......

सूत्रधार — हां, हां आर्ये। स्त्रियों का प्रवेश वहां उचित नहीं। स्वामी जी की आज्ञा है कि कोई स्त्री.......

नटी — पर, आर्यपुत्र। मैं.......

सूत्रधार — नहीं, नहीं, आर्ये! आओ हम दोनों अगले अंक की तैयारी करें।

(दोनों का प्रस्थान)

इति बा० — क्यों बेटा, डाक्टर साहब आकर बहुत बिगड़े होंगे?

आर्य से० — नहीं, बाबा, बिल्कुल नहीं बिगड़े। शांत रहे। जब सब लोग उठकर चले गये, तो उन्होंने स्वामी जी का पलंग अन्दर करवाया, कमरे में अग्नि रखवाई, औषधि आदि दी, और पण्डित गुरूदत्त जी से साफ़-साफ़

कह दिया.

इति बा० क्या, कह दिया?

आर्य से० कि आज रात को महाराज-श्री को रोग का तीव्र आक्रमण होगा।

इति बा० फिर क्या कहा पंडित जी ने?

आर्य से० कहा तो कुछ नहीं। वे थोड़ा चिन्तित से ज़रूर हो गये। फिर डाक्टर साहब के कहने पर अपने कमरे में चले गये, पर मेरा विचार है, वे सो नहीं सके। फिर वहां हमारे पास ही आ गये।

इति बा० तुम और अपने राम जो थे, पंडित जी तथा डाक्टर साहब, दोनों को ही नींद ले लेनी चाहिये थी। सवेरे दीवाली है। बहुत काम होगा।

आर्य से० नहीं बाबा, लघु-प्रयत्न नहीं है न पंडित जी, सो उन्होंने आते ही डाक्टर साहब को कहा, आपका सोना अधिक ठीक है। ज़रूरत पड़ी तो हम आपको जगा लेंगे और फिर मुझे कहा, आर्य सेवक! तुम और अपने राम भी बारी-बारी से नींद ले लो।

इति बा० तो क्या डाक्टर साहब और अपने राम सो गये?

आर्य से० हां, बाबा। एक घण्टा होने को है वे, ठीक पौने ग्यारह, सोने को गये थे। घण्टे से अधिक भी हो सकता है।

इति बा० पर मुझे तो अन्दर से डाक्टर की आवाज़ सुनाई दे रही

है।

(सभी अन्दर की ओर देखते हैं)

आवाज़ आप घबराइये नहीं, पंडित जी। आपने अच्छा किया मुझे समय पर जगा दिया। हालत अभी......

आर्य से० (भागकर अंदर जाता हुआ) देखता हूँ बाबा, क्या बात है?

(इति बाबा उठकर इधर-उधर टहलने लगते हैं। अन्दर की ओर झांकने लगते हैं, अंदर से कुछ सुनने का अभिनय करते हैं कि पांव उत्तरीय पर टिक जाता है)

स्वर हे भारत-भाग्य-विधाता-महर्षि! अव तो वह समय है जब आर्यवर्त्त को थोड़ी जाग आई है। आर्यों ने थोड़ा आलस्य तजा है तथा उनके मनों में अपने धर्म वाले स्वदेशियों को निकृष्ट, अछूत न समझने की थोड़ी भावना जगी है। उनके हृदय, देश-भक्ति की दैवी-भावना से थोड़े प्रेरित हुए हैं, और अभी आपने जाने की तैयारी शुरू कर दी है। मैं जानता हूँ, स्वामी! आपने मैडम ब्लेवट्सकी को कह दिया है कि आप 1883 का अन्त न देखेंगे। मेरे प्रभो! कौन इस देश की नौका का खेवनहार होगा? कौन इस प्रथभ्रष्ट-जन-समुदाय का मार्ग-दर्शक होगा? हे स्वामी! हे महर्षि!! हे कृपानिधे !!! आप अपना फैसला बदल डालिये। सारे विश्व को अभी आपकी और आवश्यकता है।

(फिर हाथ जोड़ता है)

ओ३म भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोद्यात॥

(अपने राम का कोठी के अन्दर से आना)

अपने रा० क्या बात है, इति बाबा? हाथ जोड़कर यह किसका अभिवादन कर रहे हैं? अभी तो प्रार्थना ही और करिये, बाबा। स्वामी जी की तबीयत एक बार तो......

इति बा० क्या हुआ था स्वामी जी को?

अपने रा० हुआ यह था, बाबा, कि अचानक ही पण्डित गुरूदत्त की आँख खुली तो उन्होंने शांति से निद्रा ले रहे स्वामी जी को पहले तो देखना ही उचित न समझा क्योंकि उन्हें उनकी निद्रा भंग हो जाने का भय था। फिर जब उन्होंने श्वास की वजह से शरीर में होने वाली हिलजुल भी न देखी तो उन्हें सन्देह हुआ।

इति बा० सन्देह हो जाना स्वभाविक था। फिर क्या किया उन्होंने?

आर्य से० (बाहर आकर) डाक्टर साहब ने मुझे भी बाहर भेज दिया है। वे कहते है, स्वामी जी अब ठीक हैं।

अपने रा० पर, सुन। जब पंडित जी ने डाक्टर को जगाकर कह दिया कि महाराज का श्वास चलता हुआ प्रतीत नहीं होता और नाड़ी भी नहीं मिल रही, तो उन्होंने क्या किया?

आर्य से० तो उन्होंने ग्लास लगाकर कुछ रुधिर फेफड़ों से निकाल दिया। अब स्वामी जी का श्वास भी चल रहा है तथा नाड़ी भी।

इति बा० हे भगवान! मैं तो डर गया था। आओ हम लोग तीनों मिलकर स्वामी जी के स्वास्थ्य हेतु 'गायत्री-मन्त्र' का जाप करें।

(तीनों गायत्री-मंत्र पढ़ने लगते हैं)

ओ३म भूर्भुवः स्वः ।

तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोद्यात॥

॥ ओ३म् ॥

अंक तीसरा

दृश्य पहला

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 30

दिन मंगलबार

दीपावली

समय

मघ्याह्नोत्तर

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

अंक तीसरा

दृश्य पहला

(सूत्रधार और नटी का प्रवेश)

नटी आज क्या बात है, आर्यपुत्र। यहां पर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा? इति बाबा भी नहीं।

सूत्रधार सब यहीं है, आर्ये! ज़रा स्वामी जी ने सभी लोगों को अपने पास बुला लिया है।

नटी अपने पास! अन्दर, कमरे में?

सूत्रधार हां, हां, आर्ये! अन्दर, कमरे में! देखती नहीं कोठी के सभी दरवाज़े तथा खिड़कियां यहां तक कि रोशनदान भी खोल दिये गये हैं।

नटी ऐसा क्यों, आर्यपुत्र?

सूत्रधार इसका उत्तर तुम्हारी समझ में तब आएगा जब आज प्रातः से अब तक जो कुछ हुआ, उसे अपने चेतन में लाओगी।

नटी अच्छा, आर्यपुत्र! ज़रा सोच लेने दीजिए।

(सोचकर) हां! ए....हां! याद आया। आज प्रातः ही डाक्टर लछमन दास ने सब लोगों को कह दिया था कि जब तक कोई बड़ा डाक्टर चिकित्सा-कार्य में योग न देगा, तब तक मैं स्वामी जी की चिकित्सा

नहीं करूँगा।

सूत्रधार — तब लोगों ने क्या कहा, आर्ये?

नटी — लोगों ने कहा, स्वामी जी की चिकित्सा सम्भाल न कोई अन्य डाक्टर कर सकता है, न मनुष्य। पर, आर्यपुत्र! यकायक ही डाक्टर साहब ने ऐसा निर्णय क्यों ले लिया?

सूत्रधार — सीधी सी बात है, आर्ये! स्वामी जी की देह-इति को समीप जान कर ही डाक्टर ने ऐसा कहा। वे नहीं चाहते थे कि पीछे से लोग कहें कि लछमनदास मूर्ख था।

नटी — तो क्या वे इसीलिये यहां के सिविल सर्जन डाक्टर न्यूमैन को बुला लाये थे?

सूत्रधार — और नहीं तो क्या?

नटी — तो फिर डाक्टर न्यूमैन ने क्या सम्मति दी?

सूत्रधार — उन्होंने कहा महाराज-श्री को डबल-नमूनिया है और लछमनदास द्वारा की जाने वाली चिकित्सा के बारे में उन्होंने मत प्रकट किया कि अगर दस डाक्टर इकट्ठे मिलकर भी इलाज करते तो डाक्टर लछमनदास से बेहतर इलाज न कर सकते।

नटी — पर, आर्य पुत्र! वह पुलटिस वाली बात मेरी समझ में नहीं आई।

सूत्रधार — इसमें समझ न आने की कोई बात नहीं है, आर्ये!

बाह्य-चिकित्सा के बारे में दोनों डाक्टरों में मतभेद था। डाक्टर लछमन दास कहते थे कि तारपीन का तेल लगाकर रुई बँधवाते हैं तथा डाक्टर न्यूमैन का मत था, मैं राई की पुलटिस बँधवाता हूँ।

नटी — तो फिर लोगों ने अर्थत् आर्यपुरुषों ने गर्म-गर्म पुलटिस पाँच-छः घंटे तक स्वामी जी के बाँधे रखी, परिणाम यह हुआ कि उनकी पीठ पर आँवले पड़ गये। आर्यपुत्र! उन्होंने ऐसा क्यों किया?

सूत्रधार — जब डाक्टर न्यूमैन स्वामी जी को देखकर लौट गये, तो तीन चार आर्यपुरु ष उनके बँगले पर गये और चिकित्सा, स्वामी जी की हालत तथा पुलटिस के बारे में प्रश्न किये।

नटी — उन्होंने क्या बताया, आर्यपुत्र?

सूत्रधार — डाक्टर न्यूमैन ने बताया कि लछमनदास द्वारा की जा रही चिकित्सा ठीक है। स्वामी जी की हालत के बारे में उन्होंने कहा ऐसा रोगी पांच-छः घण्टे में मर भी सकता है, जी भी सकता है।

नटी — और पुलटिस के बारे में?

सूत्रधार — पुलटिस के बारे में डाक्टर न्यूमैन ने कहा कि उनके मत के अनुसार पुलटिस बाँधना लाभकरी रहेगा?

नटी — इसीलिये शायद, आर्यपुत्र, उन्होंने वहां से आकर पुलटिस बाँधने का कार्य ही सर्वप्रथम किया।

सूत्रधार — हां, हां, इसीलिये।

(कोठी की ओर बढ़कर कुछ सुनने का यत्न करता है)

लगता है, आर्ये, कि स्वामी जी वेद-मन्त्रों का पाठ कर रहे हैं। ज़रा यहीं ठहरना। (भागकर बरामदे की सीढ़ियां चढ़ जाता है)

नटी (उसके पीछे भागने लगती है, फिर रुककर) नहीं, नहीं, मेरा जाना ठीक नहीं होगा। आर्यपुत्र आ कर स्वयं ही बता देंगे।

(नेपथ्य की ओर देखकर) कौन? आ जाओ। इतना शरमाने की क्या बात है?

(उधर जाकर किसी स्त्री का हाथ पकड़ कर लाती है, वह घूँघट निकाले हुए है) कौन हैं आप? बताइये न (मुँह के पास कान लेजाकर) कौन? कलुआ? नहीं कलुआ तो यहां कोई नहीं। ठहरो ज़रा, अन्दर देखती हूँ। (अन्दर जाने लगती है फिर रुक जाती है) नहीं। मैं भीतर न जा सकूँगी। आप थोड़ा इन्तज़ार करें। अभी आर्य सेवक या अपने राम कोई आएगा तो उससे पूछते हैं।

स्त्री (बैठती हुई) ह ह्यां पर बैठ जाऊँ?

नटी हां, हां क्यों नहीं। लो शायद कोई आ रहा है।

(इति बाबा का आगमन)

इति बा० यह कौन है, बेटी?

नटी पता नहीं, बाबा। आते ही कलुआ को पूछ रही थी।

इति बा० अरे, तुम हो, धन्नों तुम?

स्त्री हां, जी बाबा। मैं धन्नों ई स्यूँ।

इति बा० तुम्हारा देवर भी साथ आया है क्या?

स्त्री हां जी बाबा। आया सै।

इति बा० (नटी से) कलुआ और इसका देवर यहां नहीं आये, बेटी तू कब से है यहां?

नटी ज्यादा देर नहीं हुई, बाबा। यहां आई तो यहां कोई न था। आर्यपुत्र उधर गये हैं, कुछ देखने, अन्दर। स्वामी जी ने सभी को अन्दर बुला लिया है न और अभी-अभी वेद-पाठ करता उनका स्वर सुनाई दे रहा था।

इति बा० था नहीं, बेटी है। ज़रा ध्यान से सुन। इतना रुग्ण होने पर भी स्वामी जी के स्वर में अमृत सी मधुरिमा है। इतना भारी दु:ख सह सकने की उन ही की सामर्थ्य है।

(मध्यम स्वर में वेद गान सुनाई देता है)

ओ३म्। शन्नो मित्र: शं वरुण शन्नो भवत्यर्य्यमा।

शन्नो इन्द्रो बृहस्पति : शन्नो विष्णुरुरुक्रम:।

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिण्यामि ऋतुं वदिण्यामि

सत्यं वदिण्यामि तन्माभवतु तदवकतारभवतु।

अनतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः॥

सूत्रधार — (इति बाबा के पास आकर) बहुत अनुपम दृश्य है, बाबा। अन्दर का। सभी लोग स्वामी जी के पीछे की ओर खड़े हैं। सामने की ओर कोई भी खड़ा नहीं है।

इति बा० — अभी यह स्वामी जी महाराज का ही स्वर था न?

सूत्रधार — हां, उन्हीं का था, बाबा। स्वामी जी ने पहले पूछा कि आज कौन तिथि, कौन वार है, कौनसा पक्ष है? और जब उन्हें बताया गया कि आज कृष्णपक्ष का अन्त और शुक्ल पक्ष का आदि अमावस्या है और मंगलवार है तो संस्कृत में ईश्वरोपासना करने लगे। फिर भाषा में ईश्वर का गुण-कीर्तन किया, अब गायत्री मन्त्र का बड़े हर्ष से पाठ कर रहे हैं।

नटी — हां, हां सुनो बाबा कितनी मिठास है, स्वामी जी के स्वर में।

(गायत्री मंत्र के स्वर सुनाई देते हैं)

इति बा० — (ज़रा रुक कर) यह अचानक सब स्वर बन्द क्यों हो गये हैं। कहीं....।

सूत्रधार — (इति बाबा का हाथ पकड़कर) आओ, देखें बाबा भीतर क्या हो रहा है?

(भीतर की ओर बढ़ते हैं)

आर्य से० — (बाहर आकर) लुट गये हम, बाबा। स्वामी जी हमें छोड़ गये हैं।

इति बा० — सच!

(गिरकर बेहोश हो जाता है तथा सूत्रधार और आर्यसेवक उसकी देख सम्भाल करने लगते हैं)

नटी — (पास आकर) क्या हुआ, बाबा को?

सूत्रधार — स्वामी जी का देहान्त हो गया है, आर्ये। यह समाचार सुन न पाये तथा बेहोश हो गये।

(नटी भी घुटनों में सिर रखकर बैठ जाती है। अन्दर से अस्पष्ट से स्वर सुनाई देते हैं)

पहला स्वर — स्वामी जी!

दूयरा स्वर — हे भगवान्। हमें भी साथ ले चलते।

तीसरा स्वर — अब हस अनाथों का क्या होगा स्वामी!

(धन्नों धीरे-धीरे उठने लगती है, फिर एक चीख मार कर गिर पड़ती है, नटी भाग कर उसको सम्भालती है। मन्च पर अन्धेरा छा जाता है। फिर गायत्री के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। धीरे धीरे प्रकाश फैलता है। इति बाबा के गिर्द आर्यसेवक, अपने राम, मोटू तथा विद्यार्थी बैठे नज़र आते हैं।)

इति बा० — स्वामी जी के अन्तिम शब्द क्या थे, आर्य बेटा?

आर्य से० — गायत्री मन्त्र के जाप के पश्चात् कुछ देर तक महाराज समाधिस्थ रहे और फिर आँखें खोल कर कहने लगे,

	हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा पूर्ण हो, आहा!!! तैंने अच्छी लीला की।
इति बा०	इन अन्तिम शब्दों को बोलते समय वह किस करवट लेटे हुए थे?
आर्य से०	महाराज उस समय सीधे लेटे हुऐ थे। पर श्वास को रोक कर, एक दम बाहर निकाल देने से पहले उन्होंने स्वयं ही करवट भी ले ली थी। उनके अन्तिम श्वास बाहर निकले, उस समय ठीक छः बजे थे।
अपने रा०	और बाबा, जब चार बजे थे तो स्वामी जी ने आत्मानन्द को अपने पास बुलाया था।
मोटू	पर आत्मानन्द को तो स्वामी जी ने आबू को जाते समय विदा कर दिया था।
इति बा०	हां, कर दिया था। पर अब वे यहीं पर है।
विद्यार्थी	यह आत्मानन्द वही हैं न जो स्वामी जी के लेखक थे।
इति बा०	नहीं, जिसे स्वामी जी बोलते जाते थे, और वह लिखता जाता था, वह तो रामानन्द ब्रह्मचारी था।
अपने रा०	आत्मानन्द आकर महाराज जी के सामने खड़ा हो गया। तो स्वामी जी बोले या तो पीछे आ जाओ, या सिरहाने बैठ जाओ। फिर कहने लगे, तुम्हारी क्या इच्छा है?

आर्य से०	मैं तब शायद कहीं गया हुआ था। फिर क्या हुआ? क्या कहा आत्मानन्द ने?
अपने रा०	बोला, स्वामी जी हमारी सब की इच्छा यही है कि भगवान् आप अच्छे हो जायें। बोले, आत्मानन्द यह देह है, इसका क्या अच्छा होगा। फिर आत्मानन्द के सिर पर हाथ रख कर बोले, ''आनन्द से रहना''।
इति बा०	स्वामी जी को सब विदित था कि अब यह शरीर टिकने वाला नहीं हैं।
आर्य से०	और बाबा तब पाँच बजे थे जब एक जने ने स्वामी जी से पूछा था कि उनका चित्त कैसा है? बोले, तेज़ और अन्धकार का भाव है।
मोटू और विद्यार्थी	इस बात का क्या अर्थ है, बाबा?
इति बा०	इसका अर्थ है........
	(बाहर की ओर से 'वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरू जी की फतेह' की आवाज़ आती है। इति बाबा के बिना सारे उठ कर नेपथ्य की ओर देखने लगते हैं)
	(एक निहंग का प्रवेश)
निहंग	वाहेगुरू जी का खालसा, वाहेगुरू जी की फतेह। की गल्ल ऐ गुरमुखो! दिवाली दी रात। ना कोई दीवा ना मोमबत्ती। कोल दी जा रिहा सी, देखिया न्हेरा पियै। मन विच आगी पुच्छ लो, वई, राजा भित्रा की कोठी

च चानण क्यों नी।

इति बा० बात यह है कि राजा साहब के स्वामी जी का देहान्त हो गया है।

निहंग केहड़े स्वामी जी? तुसीं दयानन्द सरस्वती दी गल्ल तां नी करदे किते?

इति बा० हां, हां वही। आप उन्हें जानते हैं क्या?

निहंग चंगी तरां नी। हां, इक्क बारी मिलिया ज़रूर सी अम्बरसर। पतन्दर ने स्यापा ई खड़ा कर लिया सी ओथे।

इति बा० क्यों क्या हो गया था वहां?

निहंग होना की सी। ऐमें करता खण्डन, अखे सुणिया सी ओथे इक अमृत दा सरोवर ऐ। पर इस विच्च तां सणे केसीं बड़ जांदे ने।

इति बा० फिर क्या हुआ?

निहंग होना की सी। सब ठीक हो गया। साडे गुरुआं ने केहड़ा पाखण्डां दा खण्डन नहीं कीता?

इति बा० स्वामी दयानन्द ने तो वेदों का डंका बजवा दिया सारे संसार में।

निहंग ओए, आहो। साडे गुरुआं ने किहड़ा वेदां दी निन्दा कीती ए। साडे गुरू ग्रण्थ साहब दे पत्रा 1276 ते लिखिया :

बेद वाणी जग बरतदा तै गुण करै बिचार॥

एसे तरां आसा दी वार विच्च किहै:

चारे वेद होए सचिआर॥

पढ़े गुणै तिस चार विचार॥

साडे गुरू तां भाणे नूँ मिट्ठा करके मन्नण दी जाच वी दस्सगे। तुसीं चढ़दीयां कलां च होवो। गुण-कीर्त्तन करो।

(जाता हुआ फिर 'वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरू जी की फतेह' का जैकारा लगाता है)

आर्य से० इति बाबा, निहंग ठीक कहते हैं। सारी रात पड़ी है। दाह-संस्कार की सारी तैयारी हुई पड़ी है। अब आप कोई भजन या गीत कहलवाएँ न, सभी को।

इति बा० अच्छा लो। मेरे पीछे-पीछे सब बोलना।

'वेदों का डंका आलम में, बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।'

सारे जने (दोहराते हैं) वेदों का.........

इति बा० सब जगह ओम् का झण्डा फिर, फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने।

सारे जने (दोहराते हैं) सब जगह......

॥ ओ३म् ॥

अंक तीसरा

दृश्य दूसरा

सन् 1883

महीना अक्तूबर

तारीख 31

दिन बुधबार

दीपावली

समय

सूर्योदय

स्थान

अजमेर

में

राजा भिनाय की कोठी

अंक तीसरा

दृश्य दूसरा

(मंच पर कोई नहीं है। पार्श्व से 'वेदों का झंडा आलम में, फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने' बाले गीत के बोल उभरते हैं। फिर मन्द होते हुए रुक जाते हैं कि सूत्रधार और नटी मंच पर आते हैं)

सूत्रधार (नटी को मंच के बीचों-बीच छोड़ कर, आप आगे आकर) आदरणीय दर्शक-वृन्द! अति शोक का विषय है कि हमारे नाटक के नायक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वति का परलोक गमन हो गया है। 'स्वीकार-पत्र' में उन द्वारा निर्देश दिया गया है कि उनके शरीर को शहर की दक्षिण दिशा वाले श्मशान में जलाया जाये। उसके लिये वहां सब व्यवस्था कर दी गई है। स्वामी जी के पार्थिव शरीर को स्नानादि, करवा कर तथा उस पर चन्दनादि का लेप करके, कोठी में दर्शानार्थ रखा गया है। बड़े सवेरे से हजारों शोकातुर जन महाराज-श्री के दर्शन कर चुके हैं। अभी थोड़ी देर में उनके पार्थित शरीर की अन्तिम यात्रा आरम्भ होगी।

(थोड़ा रुक कर, तथा इधर-उधर देखकर)

सच, आपकी जानकारी के लिये अभी आप के सामने उस सारी सामग्री की सूची पढ़ी जायेगी जिसका कि उनके अन्त्येष्टि कर्म अर्थात्, नरमेध-यज्ञ में उपयोग किया जायेगा। आओ आर्ये! पढ़ो सूची।

नटी — (आगे आकर) घृत, तीन मन तीस सेर। चन्दन, दो मन दो सेर एक पाव। केशर चालीस तोला। कपूर पाँच सेर। कस्तूरी नौ माशा। अगर चार सेर। चीनी तीन सेर चार छटांक। प्लाशादि काष्ठ.........

(नेपथ्य से शोर सुनाई देता है)

सूत्रधार — यह क्या मुसीबत आ गई, आर्ये? कैसा कोलाहल है?

नटी — देखती हुँ, जा कर। बस 'नहीं करने देंगे' यही शब्द बार-बार सुनाई दे रहें हैं।

(नेपथ्य की ओर जा कर देखती है)

सूत्रधार — ये जन कौन हैं, आर्ये? इधर लिवा ला।

नटी — (भागकर आती हुई) गज़ब हो गया, आर्य पुत्र! पता नहीं यह नाटक किस मुहूर्त्त में शुरू हुआ था, दो संन्यासी खड़े इति बाबा से झगड़ रहे हैं।

(नेपथ्य से फिर कोलाहल सुनाई देता है)

सूत्रधार — मैं जाता हूँ, देखता हूँ क्या बात है।

नटी — पर किसी से दंगा मत कर बैठना, आर्यपुत्र।

सुत्रधार — नहीं आर्ये।

(जाता है)

नटी — अब आने जाने वालों की खूब भीड़ होगी। क्यों न यह उत्तरीय अब उठा लिया जाये।

(झुककर उठा लेती है)

पर वे मुए 'अपात्र' कैसे मंच पर चले आ रहे हैं?

संन्यासी — (मिलकर) पर यह हमारा अटल निर्णय है, हम दयानन्द के शरीर को जलाने नहीं देंगे।

इति बा० — पर उनका तो दाह-संस्कार ही होगा।

संन्यासी-1 — नहीं होगा। हम देखते हैं कैसे होगा?

आर्य से० — पर स्वामी जी स्वयं निर्देश दे गये हैं।

संन्यासी-2 — क्या होता है निर्देश-फिर्देश से? हम नहीं जलाने देंगे।

संन्यासी-1 — हम तो गाड़ेंगे। क्या हुआ दयानन्द हमारा विरोधी था पर था तो सन्यासी।

संन्यासी-2 — और हम संन्यासियों की ही भांति उसके शरीर को पृथ्वी में गाड़ेंगे।

अपने रा० — यह कदापि नहीं होगा।

संन्यासी — यह होगा, हम देखते हैं, उनके शरीर को कौन जलाता है।

(कोलाहल सुनकर कोठी में से कुछ लोग बाहर आते हैं)

एक — देखो महाराज! स्वामी जी जैसा निर्देश दे गये हैं, वैसा ही होगा। आप दंगा न करें।

संन्यासी — दंगे की क्या बात है? दयानन्द संन्यासी था। हम भी संन्यासी हैं। उसका शव हमें दे दो। हम अपनी विधि से उसका संस्कार करेंगे।

आर्य से० — यदि न दें तो?

इति बा० — तो, कोई कुछ नहीं कर सकेगा। 'स्वीकार पत्र' की तस्दीकशुदा कापी मेरे पास है। देखना हो तो आप

देख लें।

(जेब से कागज़ लेने के लिये हाथ बढ़ाता है, फिर रुक कर) हमने इसको पढ़कर क्या लेना है। अच्छा ही हुआ कि हम केवल दो ही हैं। हमारी मण्डली होती तो शव को ज़बरदस्ती ले जाते।

आर्य से० देख लेते, कैसे ले जाते।

सन्यासी अरे जा ख्रीष्ट की दुम। अब तक ईसाई रहा। अब, ढोंग करता है, आर्य बनने का। न, न, क्या देख लेता तू?

अपने रा० (हाथ जोड़कर) महाराज! कृपया आप जाएं। हम आप से बिनती करते हैं।

सन्यासी जाते हैं, जाते हैं। रहने दो हाथों को। कहीं जुड़े ही न रह जाएं।

(दोनों का प्रस्थान)

इति बा० आर्य बेटा! तुम्हारे ईसाई होने का इन संन्यासियों को भी पता है।

आर्ये से० पर बाबा! इन्हें यह पता नहीं कि ईसाई होने से पहले मैं 'शूद्र' था। स्वामी जी सब जानते थे। इसीलिए मेरे द्वारा तिलक लगा रखने को कभी नहीं कोसते थे। कल जब आत्मानन्द जी को बुलाकर पूछा कि क्या चाहते हो तो मेरे मन में भी आई कि स्वामी जी मुझ से भी पूछें। पर......

इति बा० पर क्या? क्या, नहीं पूछा उन्होंने?

आर्य से० पूछा क्यों नहीं? बाबा, स्वामी जी तो अपरोक्ष-द्रष्टा थे। जब कमरे में कोई दूसरा न रहा तो संकेत से मेरे को अपने पास बुलाया। वही पूछा। जो मेरे दिल में था। मैंने भी अपने दिल की बात कह दी।

अपने रा० क्या कह दिया? तुमने पहले तो कभी बताया नहीं।

आर्य से० वही दिल की बात, जो मैं परसों-नरसों तुम्हें नहीं बताने जा रहा था, फिर पता नहीं कौन आ गया था?

अपने रा० हां! स्वामी जी की पालकी आ गई थी। क्या बात थी वह?

आर्य से० कुछ नहीं? बस, छोटी सी बात थी मन में, बहुत देर से। जाने कब पूरी होती। स्वामी जी ने इसका अवसर दे दिया, और वह पूरी हो गई।

इति बा० मगर क्या?

आर्य से० बस इतनी कि मैं अपने माथे का तिलक, महाराज जी के श्री-चरणों से पोंछना चाहता था। उन्होंने मान लिया।

इति बा० अरे हां! तभी तूने आज तिलक नहीं लगाया।

आर्य से० हां! मेरे सिर पर अपना हाथ रखकर स्वामी जी ने कहा, "सच्चा आर्य-सेवक बनना, बेटा!"

(रुंधे हुए स्वर में)

और ये शब्द मुझे जन्म भर याद रहेंगे। और उस स्नेह स्पर्श को मैं जन्म-जन्मान्तर तक नहीं भुला सकूंगा। (रोने लगता है)

इति बा० मत रोओ बेटा। ठीक है, वह स्पर्श तुम्हें क्या अब

किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकेगा। बस! इससे पहले कि कोई और विघ्न खडा हो, आओ शव-यात्रा की तैयारी......अरे, चुप करो बेटा....जाओ,

(विदूषक का अचानक प्रवेश)

विदूषक — (अट्टहास करता हुआ) किस-किस को चुप कराओगे। इति बाबा कौन नहीं रो रहा आज? सभी रुदन कर रहे हैं। अनाथों ने तो रोना था, सनाथ भी रो रहे हैं। विधवाएं रो रही हैं। अछूतों को तो रोना था, द्विज भी रो रहे हैं। दीन रो रहे हैं हम सब ही रहे हैं। (रोने लगता है।)

इति बा० — अरे, बस! रोने का ढोंग करता है। क्या लोग नहीं जानते कि विदूषक रोया नहीं करते। कभी रोते भी हैं तो रंगशाला में बैठे दर्शक-श्रोताओं को हँसाने के लिए रोते हैं।

विदूषक — पर बाबा, मैं तो सचमुच रो रहा हुँ। (आँखों को खोलने के लिए, गालों पर अंगुली रखकर दबाता हुआ) ये देखो, मेरी आँखों से आँसू स्वतः ही नहीं आ रहे हैं क्या?

इति बा० — आँसू तो जब आते हैं, आँखों से, तो स्वतः ही आते हैं, बेटा, पर बेचारे आँसुओं को यह तो नहीं पता होता कि वे क्यों आ रहे हैं? और फिर विदूषक की आँखों से बह रहे आँसुओं का कारण तो दो जने ही जानते हैं।

विदूषक — दो जने कौन, बाबा?

इति बा० — स्वयं विदूषक अर्थात् तुम और दूसरा अर्थात्, मैं।

विदूषक — अच्छा इति बाबा, यदि बता दोगे कि मैं क्यों रो रहा हुँ, तो व......तो म.......

इति बा० — अरे हट! धूर्त्त कहीं का!! बता तो, क्या तू इस लिये नहीं रो रहा था कि नाटक में तुझे तेरा स्थान नहीं दिया गया।

विदूषक — हां, हां! इति बाबा! ठीक जाना आपने। पर क्या रोने के माध्यम से अपने मन की व्यथा कह देने का यह मेरा कर्म उचित नहीं?

इति बा० — कर्म तो उचित है, बेटा। समय उचित नहीं। और यह भी तो पता नहीं तुम्हें गुस्सा किस पर है?

विदूषक — लेखक पर इस नाटक के लेखक पर। श्री एल-बी-एस आर्य-महिला कालेज के बसंत कुमार रत्न पर।

इति बा० — अरे जा! अनार्य कहीं का। सारा जीवन स्वामी जी के साथ रहा, तू आर्य न हो सका। नाटककार पर तुम्हारा गुस्सा बिल्कुल ठीक नहीं है, क्योंकि नाटक में उसने 'दयानन्द' सरस्वती या 'स्वामी दयानन्द' ऐसा कोई पात्र, नायक के रुप में पेश ही नहीं किया। उसने तो प्राचीन परिपाटी को बदल कर, एक नवीन बात की है।

विदूषक — नवीन बात कौन सी, बाबा?

इति बा० — यही कि 'राम लीला' की भांति उसने 'दयानन्द लीला' नहीं रची कि भगवान् राम को पात्र के रूप में, जैसे दिखाया जाता है वैसा करता। वैसा करता तो स्वामी

जी की कही बात को वह गल्त सिद्ध करता कि.........

(नटी का प्रवेश)

नटी — अनर्थ हो गया, बाबा! इस मुए विदूषक ने भी अपने मन से स्वांग रचा लिया है। मैंने तो इसे एक सौम्य तथा ऋषितुल्य पात्र के रूप में सजाया था, पर यह देखो, यह....पागलों जैसा वेष धारण करके मंच पर आ गया है। मेरी तो शामत आ जाएगी, बाबा, आर्यपुत्र को जब पता चलेगा। अभी तो वह स्वामी जी की अर्थी सजाने का काम देखने गए हैं।

इति बा० — कोई बात नहीं बेटा, मैं सब संभाल लूंगा। तू इसके लिए एक नई पोशाक लेकर.........

नटी — नई पोशाक कहां से जुटाऊँ, बाबा? बताया था न कि?.........

इति बा० — हां हां! याद आया, वहां से तो सब कुछ कोई चुरा ले गया है। अच्छा तो, बेटी तू चुपके से जाकर.......

नटी — मैं समझ गई बाबा! चुपके से जाकर सब कुछ आर्यपुत्र को बढा दूँ.........नहीं, बाबा बता दूं।

विदूषक — इतना घबरा गई हो, नटी दीदी, घबराने की तो कोई बात नहीं है, अब बताने से कुछ नहीं होगा। कोई व्यवस्था आपके आर्यपुत्र से इतनी शीघ्र नहीं बन पड़ेगी। क्या ही अच्छा हो आप सूत्रधार भाई को यहां ही बुला लाएं।

इति बा० — हां हां बिटिया, जल्दी से जाकर तू आर्यपुत्र को यहीं बुला ला, यहीं दर्शकों के सामने वे जैसा चाहेंगे,

वैसा...(सूत्रधार को आते देखकर) लो वह स्वयं ही आ गए। अब ये जानें या विदूषक, आओ हम दोनों चलकर.......

सूत्रधार — दोनों नहीं बाबा। अकेली वह चली जाएगी, आप यहां मेरे पास रहें ताकि इस पाजी विदूषक के झूट-सच का निर्णय हो सके। यह जो, रूप इसने बना रखा है इसे यह उचित तो बतलाने का यत्न करेगा ही। मैं अकेला...........

इति बा० — कोई बात नहीं, बेटा। मैं हूँ यहां तुम्हारे पास नर-मेध यज्ञार्थ सारी सामग्री, नगर के दक्षिण भाग में स्थित मलूसर श्मशान में पहुंचा दी गई है या नहीं। यह काम अकेली आर्य-पुत्री देख लेगी (नटी की ओर इशारा करके) जाओ बिटिया।

(नटी का प्रस्थान)

सूत्रधार — देखो, बाबा.......

विदूषक — (बात काट कर) बाबा तो कब से देख ही रहे हैं, देखने की अब आप की बारी है, श्रीमान् सूत्रधार।

सूत्रधार — पर तुम्हारी मूर्खता की ओर इंगित करके बाबा को अपनी ओर करने की भी तो मेरी बारी है।

इति बा० — ठीक है बेटा, अब तुम इसके पास जो कुछ भी अवांछनीय है, वह लेकर फेंक दो, ओर इसे सुचारु रूप से मंच- योग्य बनाओ।

विदूषक — मेरे पास अवांछनीय कुछ भी नहीं है, बाबा। यह देखते हैं न, बाबा। यह पोटली इसमें हैं आधा सेर

लौंग।

सूत्रधार — तो यह लौंगों की पोटली क्यों रखे हुए हो पास?

विदूषक — लोगों को यह बताने के लिए कि स्वामी दयानन्द ने गुरू श्री विरजानन्द जी को गुरु-दक्षिणा में आधा सेर लौंग दिए थे, यह कहानी मनगढंत है।

इति बा० — ठीक कहते हो बेटा। दयानन्द के पास आधा सेर लौंग कहां से आते। यह बात गुरु विरजानन्द भी जानते थे तभी तो उन्होंने विदायगी के समय कहा था "तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने दिन जीवित रहोगे उतने दिन आर्यवर्त्त में आर्य ग्रंथों की महिमा स्थापित करोगें, अनार्य ग्रंथों का खंडन करोगे और भारत में वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे"। और, क्या तुम जानते हो ऋषि दयानन्द ने उत्तर रूप में क्या कहा?

विदूषक — वे सिर्फ 'तथास्तु' बोले और जीवन में उन्होंने जो कुछ किया उसका साक्षी मैं तब बनुं जब ज़माना जानता न हो।

सूत्रधार — उन्होंने तो लोगों की कण्ठियां उतरवा दीं और तुम अपने गले में अब भी एक कण्ठी पहने हुए हो। उतारो इसे।

विदूषक — ठीक है उतारता हूं पर याद रखो यह कण्ठी उस एक बालिश्त ऊँचे ढेर में से एक है जो कि पुश्कर में लोगों द्वारा उतार फेंकी कंठियों से लग गया था।

इति बा० — हां हां यह सन 1866 की बात है। पर इस प्रकार तो

तुम्हारे पास वे सब चीजों का होना भी सम्भव लगता है जिन-जिन को सैकडों नहीं हजारों लोगों ने त्यागा।

सूत्रधार — हां बाबा! लोगों द्वारा फेंकी गई मूर्त्तियों तथा त्यागनीय विचारों को लिए फिरना बिलकुल भी सार्थक नहीं। क्यों विदूषक भाई भला ये बैंगन किस लिए उठाये फिरते हो?

विदूषक — ये भी किसी प्रयोजन वश रखे हैं।

सूत्रधार — लेकिन किस प्रयोजन वश? जरा हम भी तो सुनें।

विदूषक — तो सुनो एक बार जब स्वामी जी हरिद्वार से सहारनपुर की ओर चले तो उन्हें तीन दिन तक निराहार रहना पड़ा। फिर लंढोरा में एक खेत वाले को संकेत किया तो उसने तीन बैंगन दिए। उन्हीं को खाकर आप श्री ने अपनी भूख मिटाई।

इति बा० — वह तो ठीक है, बेटा। पर इस प्रकार तुम कितनी बातों को याद रख सकोगे? महान् आत्माओं से संबंधित अच्छे विचारों को, उनकी शिक्षाओं को मन में बैठा लेना चाहिए, न कि उस सबकुछ को अपने शरीर पर धारण कर लेना चाहिए, जो कुछ भी उनसे संबंधित हो।

सूत्रधार — ठीक कहते हैं, बाबा, नहीं तो तुम्हारे पास वो रुद्राक्ष की माला भी होनी चाहिए थी, जो वे कभी पहना करते थे। वे मजबूत जूते, रेशमी पगड़ी तथा अभ्रक भस्म की शीशियां.....।

इति बा० — पर अभ्रक भस्म वे सदा ही प्रयोग में नहीं लाते थे।

समय, स्थान तथा दूसरे कई कारणों से वे अपने खान पान में विविधता ले आया करते थे।

विदूषक — बिल्कुल ठीक है, जैसे जब सन् 1867 में वे रायघाट में थे, तो भोजन के पश्चात् तुलसी की पत्ती चबाया करते थे और उन्हीं दिनों उनके मसूड़ों में पीड़ा थी तो वे उन पर तम्बाकू लगाया करते थे और.........

सूत्रधार — और जब वे.........

इति बा० — और जब वे 1869 में कानपुर में थे तो रुद्राक्ष के बारे में कहा करते थे, इन गुठलियों को पहनने से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति तो........

विदूषक — यह कोलाहल है।

सूत्रधार — अरे मसखरे! तुम्हें क्या हो गया। इति बाबा के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हुए शरम नहीं आती तुम्हें?

इति बा० — नाराज़ मत होओ, बेटा उस पर। इसके ये शब्द भी स्वामी जी ही के हैं। जब किसी बात में दो-तीन आदमी इकट्ठे बोलने लगते थे तो वे 'यह कोलाहल है' कह दिया करते थे।

विदूषक — और हां बाबा आपको तो पता ही होगा कि आधुनिक ब्राह्मणों के बारे में वे कौन सा श्लोक पढ़ा करते थे।

इति बा० — वे कहा करते थे-

टका धर्मष्टका कर्म टका हि परमं पदम्।

यस्य गृहे टका नास्ति हा टका टकटकायते॥

सूत्रधार — और एक बार किसी सभा में स्वामी जी ने किसी के राम गायत्री सुनाने पर 'गधा गायत्री' भी तो सुनाई थी। भला क्या थी वह, बाबा?

इति बा० — 'लम्बकर्णाय विद्महे.........'

सूत्रधार — मैं पता करके अभी आया बाबा, तब तक आप इस विदूषक को इस योग्य बना दें ताकि यह लोगों तक महर्षि का सन्देश पहुँचा सकने में समर्थ हो जाए।

इति बा० — तुम जाओ बेटा, मैं देखता हूँ।

सूत्रधार — जाता हूँ बाबा, देखता हूँ। (प्रस्थान)

विदूषक — मैं भी जाता हूँ, बाबा।

इति बा० — (बांह पकड़ते हुए) अरे तुम कहां चले। इस प्रकार लोगों में जाओगे तो उन पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। फेंको इन सभी फ़िज़ूल की वस्तुओं को। नहीं फेंकोगे तो लोग तुम्हें पागल समझेंगे।

(इति बाबा, उससे एक-एक चीज लेकर फेंकने लगते हैं तो, एक पोटली को विदूषक मजबूती से पकड़ लेता है।)

इति बा० — अरे छोड़ इसे भी। क्यों जंजाल बांध रखा है साथ में?

विदूषक — यह जंजाल नहीं है, बाबा। जंजाल कहते हो, इसे। देखो, खोल के देखो। यह जंजाल है क्या? जिसने मुझे अन्धेरे से निकाला, उसे तुम जंजाल कहते हो। देखो, देखो। स्वयं देखो, बाबा, कि यह जंजाल नहीं है। यह तो उस भारत-भाग्य-विधाता महर्षि की अमर रचना है। भटकी हुई कौम के लिए एक प्रकाश-

स्तम्भ के समान। और तुम इसे जंजाल कहते हो, बाबा.......(अट्टहास करता है।) जंजाल-----न मालूम आज आपको क्या हो गया है बाबा कि आज ये सब कुछ आपको जंजाल दिखाई देने लगा है।

इति बा० — अच्छा, अच्छा! 'सत्यार्थ-प्रकाश' है। ठीक कहा है, बेटा। यह विचलित हो गये हुए मस्तिष्क को इस योग्य बनाएगा कि तू महर्षि के संदेश को लोगों तक पहुंचा सके। ले इसे अपने पास रख।

विदूषक — देखो न बाबा मैं कोई अंगदराम शस्त्री तो हूँ नहीं जो स्वामी जी के श्लोकबद्ध उपदेश जनता को सुना सकूँ।

इति बा० — अरे! तूने याद करवा दिया मुझे। शास्त्री जी ने महर्षि के संदेशों को श्लोकवद्ध किया था।

विदूषक — तो कोई श्लोक सुनाइए न, बाबा।

इति बा० — रुद्राक्ष-तुलसी-काष्ठ-माला-तिलक धारणम्।

पाखण्डं विजानीयात पाषाणादिकाअर्चणम्॥

विदूषक — (अट्टहास लगाकर) और देखा बाबा, स्वामी जी का पक्षपात कर गए न, शास्त्री जी। स्वामी जी की स्फटिक की माला का ज़िकर तक नहीं किया।

इति बा० — मुझे सब मालूम है, बेटा, तुम्हारा इशारा किधर है। तू कहीं उस समय की बात तो नहीं कर रहा जब 1866 ई० में महर्षि मेरठ आए थे, तो वे दोशाला ओढ़ते थे, जुराबें पहनते थे तथा गले में स्फटिक की माला पहनते थे।

विदूषक — ठीक है बाबा, इतिहास से संसार की कोई घटना छुपी थोड़े रह सकती है...... (कुछ सुनने का अभिनय करता हुआ) बाबा, यह रो कौन रहा है?

इति बा० — यों तो सभी रो रहे हैं, बेटा। पर यह..........

विदूषक — सभी नहीं बाबा, देखो मैं नहीं रो रहा। मैं हंस रहा हूँ। (हंसने का प्रयास करता है, पर रोने लगता है।)

इति बा० — पर तुम भी रोने लगोगे तो उस स्त्री को कौन चुप कराएगा, जिसका करुण -स्वर अपनी ओर आता दिखाई दे रहा है।

(सूत्रधार, नटी एवं धन्नो का प्रवेश)

इति बा० — धन्नो को चुप कराओ बेटा। ऋषि-निर्वाण-दिवस पर इस प्रकार रोना शोभा नहीं देता।

नटी — पर बाबा, यह चुप करती कहां है। इसका रुदन-क्रन्दन देख कर तो मेरा मन भी रोने को कर रहा है।

सूत्रधार — और बाबा, अभी तक कलुआ भी तो नहीं आया।

(कलुआ का प्रवेश)

इति बा० — लो आ गया कलुआ तो, मगर इसके पीछे आता हुआ कौन है जो आने में संकोच दिखा रहा है?

कलुआ — नमस्ते इति बाबा, यह धन्नो का देवर है।

(देवर का प्रवेश)

देवर — नमस्ते, इति बाबा।

(सब की ओर हाथ जोड़कर) आपको भी सभी को नमस्ते।

(आर्य सेवक का प्रवेश)

आर्य से० अरे कलुआ, कहां चला गया था?

कलुआ पाली के स्टेशन मास्टर की एक चिट्ठी यहां के स्टेशन मास्टर को पहुंचानी थी। वह बाज़ार गया हुआ था, सो देर लग गई। हम बड़े अभागे हैं, आर्य सेवक, कि स्वामी जी के अंतिम आशीर्वाद भी प्राप्त न कर सके।

(रोने लगता है। धन्नो तथा आर्य सेवक भी रोते हैं।)

इति बा० (आर्य सेवक को) तुम्हें तो बिल्कुल नहीं रोना चाहिए, आर्य बेटा। लो अपने राम आ रहा है, शायद शवयात्रा आरम्भ होने वाली है।

(अपने राम का प्रवेश)

अपने रा० चलिए सब, स्वामी जी की अंतिम-यात्रा का प्रारम्भ होने वाला है।

(फूट-फूट कर रो पड़ता है।)

इति बा० धैर्य धरो बेटा, अपने राम। चलो सब लोग देखो.........

आर्य से० शवयात्रा का मार्ग कौन सा है, बाबा?

इति बा० तुम्हारा मतलब है किस-किस रास्ते से होकर मज़ल मलूसर श्मशान पहुँचेगी?

आर्य से० हां, बाबा! (गला रुंध जाता है)।

इति बा० यहां से आगरा दरवाज़ा, नया बाज़ार, अनाज-मंडी, दरगाह बाज़ार तथा डिग्गी बाज़ार से होती हुई वहां पहुँचेगी। पर तुम्हारा तो साथ जाने को.............

आर्य से०

तथा

आपने रा० हम नहीं जा सकेंगे, बाबा। नहीं देख सकेंगे, वे सब कुछ, और पीछे से कोठी में भी तो कोई रहना चाहिए।

(तभी इति बाबा रंगमंच के बायीं ओर, थोड़ा पीछे, इशारा करते हैं और सभी उसी ओर देखने लगते हैं।)

इति बा० वह देखो, आर्य भक्तों ने शव को कंधे पर उठाया हुआ है। सब से आगे रामानन्द ब्रह्मचारी, गोपाल गिरि सन्यासी, पण्डित वृद्धिचन्द्र और मुन्ना लाल, नंगे पाँव वेद मंत्र पढ़ते जा रहे हैं। उनके पीछे हैं अनन्य आर्य-पुरुष।

(वेद-मंत्र सुनाई देते हैं।)

नटी देखिए, आर्यपुत्र! अर्थी के पीछे कितना विशाल जन-समूह है!

सूत्रधार हां, हां। दिखाई दे रहा है, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, तथा मराठे सभी हैं।

(धन्नो चीख मारती है, गिरकर बे-होश हो जाती है। अपने राम व आर्य सेवक भी रोते हैं।)

नटी (सूत्रधार की बाँह पकड़कर घसीटती हुई) चलिए आर्यपुत्र, मुझ से नहीं देखा जा रहा यह सब कुछ।

सूत्रधार चलिए, नाटक भी समप्त होने को है।

(दोनों का प्रस्थान)

इति बा॰ शांत होओ सभी लोग, धैर्य धरो। क्या हुआ महर्षि का पार्थिव शरीर हमारे साथ नहीं होगा। उनके विचार, उनकी शिक्षाएं, उन द्वारा फैलाया प्रकाश हमारे जीवन के मार्ग को प्रकाशित करता रहेगा।

धन्नो (चीखती हुई) मेरा क्या होगा.........

इति बा॰ तू भी विधवा नहीं रहेगी, बिटिया, अन्तर सिर्फ इतना है कि यह काम अब.........

(अचानक अन्धेरा हो जाता है, कोई स्वर सुनाई नहीं देता, फिर धीरे-धीरे प्रकाश फैलता है तो आठ पात्र मंच पर दर्शकों की ओर पीठ करके खड़े दिखाई देते हैं और उनकी पीठ पर दिखाई देते हैं यह आठ अक्षर, प-रो-प-का-रि-णी-स-भा)

इति बा॰ अब महर्षि के कार्य को करेगी यह सभा। सभी कुछ वेदानुकूल, महर्षि की इच्छानुकूल। आओ मेरे पीछे बोलो तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

स्वर तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥

(वेद मंत्रों का पाठ सुनाई देता है)

यवनिका

श्री बसंत कुमार रत्न द्वारा महर्षि-निर्वाण का नाटक जो लिखा गया है यह आपकी महर्षि के प्रति श्रद्धा एवं उनका देश-धर्म और राष्ट् के प्रति समर्पण दिखाने की जो तड़प है, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं। इस नाटक की विशेषता यह है कि महर्षि दयानन्द जी महाराज को स्वयं कहीं पर नहीं लाया गया है। अपितु उनकी विचारधारा एवं प्रेरणा को ही दिखाया गया है।......मैं इस प्रयास की प्रशंसा करता हुआ आपका धन्यवाद करता हूँ।

– *महात्मा प्रेम प्रकाश वाणप्रस्थ, आर्य कुटिया, धूरी*